ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

बी.एड. पाठ्यक्रम

सत्र - 2021-23

पाठ्यक्रम कोड : BEd - 012

द्वितीय सेमेस्टर

चतुर्थ पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या कोड : BEd- 024

पाठ्यचर्या का शीर्षक : विद्यालय विषय शिक्षण I (सामाजिक विज्ञान शिक्षण)

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)

द्वितीय सेमेस्टर : शिक्षा 024 सामाजिक विज्ञान शिक्षण

मार्गदर्शन समिति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र
कुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा
प्रतिकुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. अरबिंद कुमार झा
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

पाठ्यचर्या निर्माण समिति

प्रो. अरबिंद कुमार झा
अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर
सह प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

श्री ऋषभ कुमार मिश्र
सहा प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संपादन मंडल

प्रो. अरबिंद कुमार झा
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. दीपक पुनसे
सह प्रोफ़ेसर
स्वालंबी शिक्षण महाविद्यालय,वर्धा

डॉ. रामार्चा पाण्डेय
सह प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. गुणवंत सोनोने
सहा प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

श्री धर्मेंद्र शंभरकर
सहा प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

इकाई लेखन

समन्वयक - श्री ऋषभ कुमार मिश्र

इकाई -1
श्री समरजीत यादव

इकाई -2
श्री ऋषभ कुमार मिश्र

इकाई -3
श्री ऋषभ कुमार मिश्र

इकाई-4
डॉ. गुणवंत सोनोने

इकाई- 5
श्री समरजीत यादव

अनुक्रम

क्र.सं.	इकाईयों का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	इकाई 1: ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान : परिचय	6-12
2.	इकाई 2: विषय ज्ञान समृद्धि	13
3.	इकाई 3: सामाजिक विज्ञान शिक्षण	14-24
4.	इकाई 4: सीखना-सिखाना	25-37
5.	इकाई 5 : आकलन	38-47

प्रधान संपादक की कलम से.....

संपादक की कलम से.....

इकाई 1
ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान: परिचय

इकाई संरचना

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान
1.4 सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व सैद्धान्तिक आधार
1.5 सामाजिक विज्ञान का विद्यालयी विषय के रूप में विकास व प्रवृत्तियां
1.6 सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध
1.7 सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में अन्तर
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.1 उद्देश्य: इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप:

- ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक सामाजिक विज्ञान के विकास को समझ सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान के सैद्धान्तिक व दार्शनिक आधार क्या हैं; को समझ सकेंगे।
- सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध को स्पष्ट कर पाएंगे।
- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अन्तर को स्पष्ट कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान में समाज के विविध सरोकारों को शामिल किया जाता है जिसके अन्तर्गत इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र आदि विषयों की विस्तृत सामग्रियों को शामिल किया जाता है।

सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या, पाठ्य सामग्री के चयन व गठन द्वारा विद्यार्थियों में समाज की आलोचनात्मक जानकारी विकसित करने में समर्थ होती है। सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थियों के अपने जीवन अनुभवों के आधार पर नए आयामों और सरोकारों को समाहित किए जाने की भी अनेक संभावनाएँ हैं। तेजी से बढ़ते हुए सेवा क्षेत्र के रोजगारों में भी सामाजिक विज्ञान का महत्त्व बढ़ा है। इसके साथ ही साथ सामाजिक विज्ञान का विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नींव तैयार करने में भी उपयोगी है।

1.3 ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक विज्ञान का निर्माण आधुनिक दुनिया, 19वीं शताब्दी में राष्ट्र-राज्य के उदय और ज्ञान की नई संरचना के उद्भव से जुड़ा हुआ है। 20वीं शताब्दी में मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सिद्धान्त और विधि के रूप में सामाजिक विज्ञान में बहुत बड़ी वृद्धि दिखाई पड़ती है। सामाजिक विज्ञान की जड़ें लगभग दो शताब्दी पुरानी है। समाज की भलाई के लिए तथा विश्वविद्यालयों में नए ज्ञान के सृजन के लिए, सत्य को खोजने वदार्शनिक खोज के लिए दावा करने में प्राकृतिक विज्ञानों ने अपना अधिपत्य जमा कर रखा हुआ था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक विज्ञान का विकास न्यूटोनियन भौतिकी के सांस्कृतिक प्रभुत्व के अन्तर्गत हुआ।उस समय व्यापक रूप से यह सांस्कृतिक धारणा विद्यमान थी कि सत्य को जानने का एक अद्वितीय रास्ते का प्रतिनिधित्व विज्ञान ही करता है। फ्रांस की क्रांति से पहले तक वैज्ञानिकों को ही ज्ञान के निर्माण के लिए श्रेष्ठ माना जाता था। उस समय सामाजिक विज्ञान को एक वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित होने के लिए प्राकृतिक विज्ञानों से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि

विज्ञान शब्द प्राकृतिक विज्ञान से जुड़ा हुआ था और उस समय या प्रश्न उठ रहा था कि क्या सामाजिक विज्ञान पूर्ण रूप से एक वैज्ञानिक विषय है।

परम्परागत रूप से ज्ञानानुशासन को दो वर्ग में बांटा गया है- पहला सामाजिक विज्ञान, जिसमें अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल और राजनीति विज्ञान को सम्मिलित किया जाता है; और दूसरा मानव विज्ञान जिसमें मनोविज्ञान, मानवशास्त्र और भाषाविज्ञान को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक विज्ञान के वर्गीकरण की प्रक्रिया ज्ञान की संरचना के विकास के साथ एक बहुत बड़े सवाल के संदर्भ में हुई है। जहाँ ज्ञान की रचना को विशेष रूप से दर्शन (फिलोसोफी) व विज्ञान के रूप में समझा जाता है।

1.4 सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व सैद्धान्तिक आधार

मानव की प्रकृति एक सामाजिक प्रकृति है। एक महत्वपूर्ण दार्शनिक प्रश्न है कि मानव होने का क्या अर्थ है? जिसको लेकर दार्शनिक प्राचीन काल से ही समाज की सैद्धान्तिक विशेषताओं के बारे में चिंतन करते रहे हैं। 19वीं शताब्दी में मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान को दर्शन (फिलोसोफी) से अलग किया गया। आनुप्रयोगिक विषयों के उद्भव के साथ ही सामाजिक विज्ञान से सम्बंधित दार्शनिक प्रश्न यहाँ पर उभरते हैं। जिनको सामाजिक विज्ञान के भीतर रहकर ही तलाशा जा सकता है। सामाजिक विज्ञान का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य मानव समाज के आनुभाविक अध्ययन के द्वारा दर्शन (फिलोसोफी) के कुछ चिरस्थाई प्रश्नों की जाँच करता है।

सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत उन चिरस्थाई प्रश्नों को तीन बड़े विषय के भीतर रखा जा रहा है: ,मानदंड (Normativity), प्रकृतिवाद (Naturalism), न्यूनीकरण (Reductionism)।

मानदंड का प्रश्न सामाजिक वैज्ञानिक खोज में मूल्य से सम्बंधित है। सामाजिक विज्ञान नजदीकी रूप से सामाजिक नीति से सम्बंधित प्रसंग से जुड़ा है इसलिए सामाजिक विज्ञान एक वस्तुनिष्ठ विषय हो सकता है। सामाजिक विज्ञान मानव समाज के भीतर मानक, नियम और मूल्य की उत्पत्ति और उसके कार्यों को ही सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत करता है। प्रकृतिवाद के प्रश्न को प्रकृति और सामाजिक विज्ञान से सम्बंधित किया जा सकता है।सामाजिक विज्ञान में प्रयोग की जाने वाली विधियाँ प्राकृतिक विज्ञान में प्रयोग की जाने वाली विधियों से भिन्न तो हैं लेकिन वह किसी भी मामले में कमजोर नहीं हैं। न्यूनीकरण का प्रश्न यह पूछता है कि कैसे सामाजिक संरचना से व्यक्ति जुड़ा होता है।

सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न है कि मानव का ब्रह्माण्ड में स्थान क्या है? मूल्यों का स्रोत क्या है? मानव प्रकृति किस प्रकार गैर मानव प्रकृति से सम्बंधित है? हम क्या जानते हैं? इन दार्शनिक विषयों पर प्रतिक्रिया करना भी सामाजिक विज्ञान के सैद्धान्तिक खोज में योगदान देना है।

सामाजिक विज्ञान में भी अध्ययन का आधार दार्शनिक है। विज्ञान एवं वैज्ञानिक पद्धति के बढ़ते महत्त्व के बीच उसकी तटस्थता पर प्रश्न खड़ा होता है कि क्या सामाजिक व्यवहार को तटस्थता के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान में हो रहे वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग पर पुनर्विचार करना होगा, क्योंकि मानवीय व्यवहार मानवीय मूल्यों से जुड़ा हुआ है। मानवीय व्यवहार का अध्ययन मूल्यरहित मानकर तटस्थता में नहीं किया जा सकता है। सामाजिक क्रिया, भाषा व मूल्यों के अर्थ को परिभाषित करके ही सामाजिक अध्ययनों का वास्तविक निष्कर्ष पाया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान ने तथ्यों के साथ वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित ढंग से निपटने के अपने खुद के तरीके विकसित कर लिए हैं। ये तरीके प्राकृतिक विज्ञानों में इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों से भिन्न हैं। पर इसका यह मतलब नहीं है, कि प्रासंगिक तथ्यों के प्रेक्षण, व्याख्या और विश्लेषण के बजाय अपनी खुद की व्यावहारिक बुद्धि या खुद की व्यक्तिगत पसन्द को इस्तेमाल करने के मामले में समाजविज्ञानी, प्राकृतिकविज्ञानी की तुलना में किसी भी तरह से ज्यादा स्वतंत्र है, चाहे बात शिक्षण की हो या शोध की।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1. सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व सैद्धान्तिक आधारों की व्याख्या कीजिए।

....

....

2. ज्ञानानुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान के विकास को स्पष्ट कीजिए।

....

....

1.5 सामाजिक विज्ञान विद्यालयी विषय के रूप में विकास व प्रवृत्तियां

आज सामाजिक विज्ञान विषय देश भर के स्कूलों में किसी न किसी रूप में पढ़ाए जा रहे हैं। पहले आम तौर पर ऐसी स्थिति नहीं थी। आजादी के पहले, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और यहाँ तक कि अर्थशास्त्र की शिक्षा भी मुख्य रूप से विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों तक सीमित थी। आजादी के बाद सामाजिक विज्ञान के विषयों की शिक्षा में निरन्तर विस्तार हुआ तथा जल्दी ही इन्हें स्कूलों में पढ़ाए जाने की माँग बढ़ने लगी।

सामाजिक विज्ञान का वर्णन कभी-कभी नीति विज्ञान के रूप में किया जाता है, हालाँकि नीति-निर्धारण में समाजशास्त्र और राजनैतिक विज्ञान जैसे विषयों का योगदान परोक्ष व सीमित ही रहता है। वैसे भी, स्कूली विद्यार्थियों को नीति-निर्माता या फिर नीति-निर्माण में परामर्शदाता बनाने का लक्ष्य रखना अपने आप में बहुत ही अव्यावहारिक बात होगी। पर अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज किस तरह काम करते हैं, इसके बारे में सामान्य जानकारी होने से विद्यार्थियों को उनकी आगे की जिन्दगी में यह समझने में मदद मिलेगी कि सार्वजनिक जीवन में नीतियों की क्या भूमिका होती है। यह उन्हें इस बारे में एक शिक्षित दृष्टिकोण बनाने का आधार प्रदान कर सकता है कि कुछ खास नीतियाँ ही क्यों अपनाई जाती हैं और अन्य क्यों नहीं। साथ ही अपनाई जाने वाली नीतियों में से कुछ ही क्यों सफल होती हैं और बाकी क्यों नहीं।

सामाजिक विज्ञान का ज्यादा महत्वपूर्ण योगदान नीति-निर्धारण के लिए प्रशिक्षित करने में नहीं है बल्कि शिक्षित व समझदार नागरिक तैयार करने में है। लोकतंत्र के अच्छे संचालन के लिए शिक्षित नागरिक वर्ग का होना अपरिहार्य है। कोई व्यक्ति अच्छे नागरिक होने के गुण अनायास हवा में से नहीं पकड़ता, उन्हें हासिल करने और बढ़ावा देने के लिए एक खास प्रकार की शिक्षा की जरूरत होती है। एक अच्छा नागरिक होने के लिए सिर्फ भौतिक व जैविक क्रियाकलापों का जानकार होना ही काफी नहीं होता, अच्छे नागरिक को उस सामाजिक संसार के बारे में भी समझ होना जरूरी है जिसका वह हिस्सा है।

स्कूल में सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत जो विषय होते हैं वे अतीत से हमारा सम्बन्ध जोड़ते हैं, ताकि हम यह समझें और उसकी कद्र करें कि हम जहाँ अभी हैं वहाँ तक कैसे आए हैं। ये विषय, हम पर शासन करने वाली संस्थाओं के अध्ययन के माध्यम से हमें वर्तमान से भी जोड़ते हैं, तथा हम जिस वृहद् पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं उसकी समझ हमारे भीतर विकसित करके अतीत और वर्तमान को परिचित सन्दर्भों में हमारे सामने लाते हैं। सामाजिक विज्ञान एक बेहतर दुनिया बनाने का सपना देखने में हमारी मदद करता है। मानवीय विकास से जुड़े हुए व्यावहारिक प्रश्न जैसे कि 'नगरों को कैसे बेहतर बनाएं? लोगों के जीवनस्तर में सुधार कैसे किया जाए? अपराध-दर को कैसे कम किया जाए? भेदभाव को कैसे दूर किया जाए? बेहतर शासन किस तरह प्रदान किया जा सकता है? उत्पादकता और कैसे सुधर सकती है'? आदि इन्हीं सब बातों से सामाजिक विज्ञान बनता है।

सामाजिक विज्ञान दुनिया भर के स्कूलों में किसी न किसी रूप में पढ़ाया जाता है। कभी इसे पर्यावरण अध्ययन कहा जाता है, जैसा कि भारत के मौजूदा प्राथमिक स्कूलों में, कभी-कभी यह - इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र - के रूप

में माध्यमिक स्कूल तक और फिर इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्रके रूप में हाईस्कूल में पढ़ाया जाता है। आजकल कई देशों में यह 'नागरिक शिक्षा' या फिर 'सामाजिक और राजनैतिक जीवन' नाम से जाना जाता है, जैसा कि भारत में भी है। कुछ देशों में, और कुछ परिस्थितियों में सामाजिक अध्ययन नाम का विषय भी पढ़ाया जाता रहा है और कुछ वैचारिक दृष्टियाँ ऐसी हैं जो इतिहास व भूगोल को सामाजिक विज्ञानों से अलग रखते हुए उन्हें पृथक विषय मानती हैं, जबकि अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र को वे सामाजिक विज्ञानों का हिस्सा मानती हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए।

1. विद्यालय विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान के विकास की व्याख्या कीजिए।

....
....

1.6 सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध

सामाजिक अध्ययन अपनी विषय-वस्तु एवं क्रियाओं को संगठित करने के लिए सामाजिक विज्ञानों से विभिन्न मूलभूत सिद्धांतों को ग्रहण करता है। प्रत्येक सामाजिक विज्ञान से ग्रहण किए जाने वाले सिद्धान्त इस प्रकार हैं-

1. भूगोल (Geography): सामाजिक अध्ययन इस विषय से निम्न सिद्धांतों को ग्रहण करता है-
   a. पृथ्वी पर निवास करने वाले प्राणियों का जीवन पृथ्वी के स्वरुप, आकार तथा उसकी गति द्वारा प्रभावित किया जाता है।
   b. जलवायु का निर्धारण सूर्य-प्रकाश, तापक्रम, वायुमंडल के दबाव, हवाओं, समुद्री धाराओं, पर्वतीय नियमों आदि के द्वारा किया जाता है।
   c. भूमि, जल, हवा आदि प्राकृतिक साधन हैं जो मनुष्य के लिए परमावश्यक हैं।
   d. मनुष्य अपना भोजन, वस्त्र तथा निवास की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करता है। ऐसा करने में वह पृथ्वी का उपयोग और विदोहन करता है।
   e. मनुष्य द्वारा प्राकृतिक साधनों का उपयोग उसकी इच्छाओं तथा उसके प्रौद्योगिकी के ज्ञान से सम्बंधित है।
2. इतिहास (History): सामाजिक अध्ययन इतिहास से निम्न मूलभूत सिद्धांतों को ग्रहण करता है-
   a. स्थान एवं समय के द्वारा ऐसे ढांचे का निर्माण किया जाता है जिसमें घटनाएं घटित होती हैं।
   b. इतिहास स्वयं की पुनरावृत्ति नहीं करता है, वरन अतीत की घटनाएं वर्तमान की घटनाओं को प्रभावी करती हैं।
   c. प्रत्येक स्थान पर मानवीय सम्बन्धों को निर्धारित करने में पारस्परिक निर्भरता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
   d. विभिन्न मानवीय प्रेरक, प्रेरणाएं एवं विचार, चाहे वे ऐतिहासिक एवं मानवीय प्रगति की दृष्टि से सत्य हैं या असत्य; स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यों को प्रभावित करते हैं।
3. राजनीतिशास्त्र (Political Science):सामाजिक अध्ययन राजनीतिशास्त्र से निम्नलिखित सिद्धांतों को प्राप्त करता है-
   a. बहुत सी मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार, चर्च, प्रेस तथा व्यक्तिगत व्यवसायों द्वारा की जा सकती है, फिर भी सरकार समाज की सेवा करने वाली महत्वपूर्ण संस्था है।
   b. सरकार के अंतिम दायित्वों को पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है-अ. वाह्य सुरक्षा ब. आन्तरिक सुरक्षा स. न्याय द. सामान्य हित के लिए अनिवार्य सेवाएँ य. लोकतंत्रीय राज्य में स्वतंत्रता प्रदान करना।
   c. लोकतंत्र में सरकार जनता की सेवक है, न कि जनता सरकार की सेवक।

d. कोई भी सरकार तब तक सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकती है जब तक वह स्वयं को नवीन परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बनाती है।
e. आधुनिक विश्व के सभी राष्ट्र आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के अंग हैं।

4. अर्थशास्त्र (Economics): सामाजिक अध्ययन अर्थशास्त्र से निम्नलिखित मूलभूत सिद्धांतों को ग्रहण करता है-

(i) इच्छाएँ असीमित हैं और साधन सीमित हैं, इस कारण प्रत्येक राष्ट्र को निम्न आर्थिक समस्याओं को सुलझाना चाहिए-
किस वस्तु का उत्पादन किया जाए?
उसका किस प्रकार उत्पादन किया जाए?
उसको कितनी मात्रा में उत्पादित किया जाए?
उसका वितरण किस प्रकार किया जाए?
(ii) श्रम, प्राकृतिक साधन, पूंजी तथा ज्ञान (प्रौद्योगिकी) उत्पादन के महत्वपूर्ण कारक हैं।
(iii) जीवन का उच्च स्तर उत्पादकता पर निर्भर है।

5. मानवशास्त्र (Antropology): सामाजिक अध्ययन मानवशास्त्र से निम्नलिखित सिद्धांतों को प्राप्त करता है-

(i) आदिकालीन लोगों के विश्वासों, परम्पराओं तथा रहन-सहन के ढंगों को आज के तत्कालीन वातावरण की परिस्थितियों से घनिष्ठ रूप में सम्बंधित किया जा सकता है।
(ii) सामूहिक जीवन का प्रादुर्भाव परिवार से हुआ और वह सांस्कृतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप जटिल हो गया।
(iii) संस्कृत में मानवीय समूहों द्वारा विकसित ज्ञान, विश्वास तथा मूल्य निहित हैं।
(iv) आधुनिक समाज विभिन्न काल एवं स्थानों की संस्कृतियों का ऋणी है।
(v) जिस संस्कृति में किसी व्यक्ति का पालन-पोषण होता है, उसका उस पर जीवनभर प्रभाव पड़ता है।

6. समाजशास्त्र (Sociology): सामाजिक अध्ययन समाजशास्त्र से निम्नलिखित मूलभूत सिद्धांतों को ग्रहण करता है-

(i) समाज का कार्य उन संगठित समूहों द्वारा संचालित किया जाता है जो सामान्य हितों की प्राप्ति के लिए संगठित किए जाते हैं।
(ii) सामूहिक क्रिया और सांस्कृतिक उन्नति के लिए समूहों के सदस्यों और समूहों के बीच आदान-प्रदान होना आवश्यक है।
(iii) परिवार, चर्च, विद्यालय, सरकार और व्यवसाय नामक संस्थाओं के द्वारा लक्ष्यों, विश्वासों, ज्ञान तथा मूल्यों को हस्तान्तरित एवं परिवर्तित किया जा सकता है।
(iv) समाज के अस्तित्व के लिए सामाजिक नियंत्रण की पद्धति अनिवार्य है।

7. मनोविज्ञान (Psychology): सामाजिक अध्ययन मनोविज्ञान से निम्नलिखित सिद्धांतों को ग्रहण करता है-

(i) व्यवहार विविध, जटिल तथा अंतर्सम्बंधित कारणों के फलस्वरूप होता है।
(ii)मानवीय आचरण साभिप्राय प्रजनन तथा वातावरण सम्बन्धी कारकों का फल होता है।
(iii) व्यक्ति एक-दूसरे से वैयक्तिक मूल्यों, वृत्तियों, व्यक्तित्वों आदि से भिन्न होते हैं।
(iv) समूह के सदस्य कुछ सामान्य मूल्यों और विशेषताओं को रखते हैं।
(v) प्रत्येक समूह अपने सदस्य के आचरण को प्रभावित करता है।

8. दर्शन (Philosophy). सामाजिक अध्ययन दर्शन से निम्न सिद्धांतों को ग्रहण करता है।

(i) तर्कशास्त्र, वैज्ञानिक तथा नैतिक विश्लेषण दर्शन द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

(ii) एक स्वतंत्र समाज अपने हित के लिए स्वतंत्र अन्वेषण के मार्ग को खुला रखता है और अपने नागरिकों की खोज करने की आदतों का निर्माण करता है।

सामाजिक अध्ययन विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से उक्त सामान्य विषयों या सिद्धांतों को ग्रहण करके अपने समन्वित या एकीकृत स्वरुप का निर्माण करता है।

1.7 सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन में अन्तर:

जिस प्रकार विज्ञान शिक्षा प्राकृतिक विज्ञानों पर आधारित है उसी भांति सामाजिक अध्ययन समाज-विज्ञानों पर आधारित है। सामाजिक अध्ययन मानव का अध्ययन करता है। साथ ही यह शास्त्र सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरणों के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं का भी अध्ययन करता है। यह इन प्रतिक्रियाओं का अतीत, वर्तमान तथा उभरते भविष्य के सन्दर्भ में अध्ययन करता है। यद्यपि सामाजिक अध्ययन अपनी विषय वस्तु समाज विज्ञानों से प्राप्त करता है; फिर भी इनमें अन्तर पाया जाता है। इनमें जो अन्तर पाया जाता है, वह गहनता, स्तर एवं प्रयोजन के दृष्टिकोण से है। समाज विज्ञान मानवीय सम्बन्धों का उच्चतर एवं विद्वत्तापूर्ण अध्ययन है जिसमें अनुसन्धान, खोज तथा प्रयोग के लिए स्थान होता है, परन्तु सामाजिक अध्ययन विद्यालय पाठ्यक्रम का वह अंग है जिसमें समाज-विज्ञानों के तत्त्वों, विधियों तथा शोधों को सरलतम रूप में शिक्षण की सुविधा के लिए रखा जाता है।

समाज-विज्ञान मानवीय सम्बन्धों के व्यवस्थित एवं प्रमाणिक लेखे हैं जो आधुनिक विश्व की समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं तथा साथ ही उनके समाधान के लिए शोध करते हैं। सामाजिक अध्ययन में सामाज-विज्ञानों की सरल विषय-वस्तु आती है। इसमें इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि की प्रारंभिक सामग्री तथा आधुनिक समस्याएं, समसामयिक मामले तथा तत्कालीन घटनाओं को स्थान प्राप्त होता है। इसकी विषय-वस्तु कॉलेज स्तर के सामाजिक विज्ञानों की प्रस्तावना का कार्य करती है। इसकी विषय-वस्तु का बौद्धिक स्तर सामाजिक विज्ञानों की अपेक्षा निम्न होता है।

सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं; परन्तु सामाजिक विज्ञान प्रौढ़ावस्था पर तथा सामाजिक अध्ययन बालक स्तर पर। अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन अपनी विषयवस्तु मूलतः सामाजिक विज्ञानों से ही ग्रहण करता है। सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है, जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं पुनः संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक या सैद्धान्तिक अन्तर नहीं है, वरन् केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अन्तर है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1. सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।

....
....

2. सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में बुनियादी रूप से क्या अन्तर है?

....
....

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

- कुमारी, सुशीला, (2010), "इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- जैन, आमिर चंद, (2013), "सामाजिक ज्ञान शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।

- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), ‘‘सामाजिक अध्ययन का शिक्षण’’, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), ‘‘इतिहास शिक्षण’’, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- दुबे, सत्यनारायण (2014). सामाजिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान शिक्षण. इलाहबाद: शारदा पुस्तक भवन.
- पांडये, रमाकांत, (2012), ‘‘इतिहास शिक्षा’’, दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन।
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), ‘‘समाज अध्ययन –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ’’, दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), ‘‘भूगोल – शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ’’, दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- सक्सेना, राधारानी, (2013), ‘‘नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ’’, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), ‘‘नागरिकशास्त्र शिक्षण’’, जयपुर, अपोलो प्रकाशन।
- एन.सी.आर.टी. (2010). सामाजिक विज्ञान पोजीशन पेपर
- एन.सी.आर.टी. (2010). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी (2014). लर्निंग कर्व.
- दिगंतर, शिक्षा विमर्श
- Cranston, M. (1973), ‘What are Human Rights?’, London, Bodley Head.
- Gaikwad, Pradip (Edited) (2012), ‘Indian Constitution – Architect Dr. B. R. Ambedkar’, Nagpur, Sugat Publication.
- Kohli, A. S. (2004), ‘Human Rights and Social Work’, New Delhi, Kanishk Publishers.
- Risjord, Mark (2014). Philosophy of Social Science. New York: Routledge.

इकाई 2
विषय ज्ञान समृद्धि

इस इकाई में विषय ज्ञान समृद्धि के लिए अध्येता के संपर्क केंद्र पर जब अनिवार्य सम्पर्क कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा उस दौरान उन्हें कार्यशाला व गोष्ठियों के माध्यम से उनके विषय ज्ञान को समृद्ध किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त नीचे कुछ पुस्तकों की सूची दी गई है। अध्येता इन पुस्तकों के माध्यम से भी अपने विषय ज्ञान का संवर्धन कर सकेंगे।

इतिहास

- रोमिला थापर: भारत का इतिहास
- बिपिन चन्द्र: आधुनिक भारत का इतिहास
- सतीश चन्द्र: मध्यकालीन भारत (1206-1526) भाग-1
- रामशरण शर्मा:प्रारम्भिक भारत का परिचय
- वी.डी. महाजन: प्राचीन भारत का इतिहास

राजनीति विज्ञान

❖ ओ. पी. गाबा: राजनीति सिद्धान्त की रूपरेखा
❖ ओ. पी. गाबा: तुलनात्मक राजनीति की रूपरेखा
❖ डी. डी. बसु: भारत का संविधान: एक परिचय

भूगोल:

✓ सविन्द्र, सिंह: भौतिक भूगोल
✓ आर सी. चांदना: जनसंख्या भूगोल
✓ सविन्द्र सिंह: पर्यावरण भूगोल
✓ माजिद हुसैन: भौगोलिक चिंतन का इतिहास
✓ माजिद हुसैन: मानव भूगोल

अर्थशास्त्र:

❖ एम. एल. झिंगन: व्यष्टि अर्थशास्त्र
❖ एम. एल. झिंगन: समष्टि अर्थशास्त्र
❖ मिश्रा और पूरी: भारतीय अर्थव्यवस्था
❖ डी. आर. अग्रवाल: सांख्यिकी अर्थशास्त्र

नोट: इसके अतिरिक्त अध्येता सामाजिक विज्ञान की कक्षा 6-12 तक की एन.सी.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों से विषय ज्ञान का संवर्धन कर सकते हैं।

इकाई-3
सामाजिक विज्ञान शिक्षण

3.0 प्रस्तावना
3.1 शिक्षण के उद्देश्य
3.2 विषय विवेचन
3.2.1 लक्ष्य व उद्देश्य
3.2.2 माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें
3.2.3 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के उपागम
3.2.4 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन
3.2.5 लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के निहितार्थ
3.3 कार्य आवंटन
3.4 क्रियाएँ
3.5 संदर्भ ग्रन्थ

3.0 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सामान्य लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं। माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण किया गया है। सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न उपागम है। सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आदर्श पाठ्यपुस्तकों के निष्कर्षों के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श एक सामाजिक विज्ञान शिक्षक के के लिए महत्वपूर्ण है।

3.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे:

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य व उद्देश्य के बारे में।
2. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न उपागम के बारे में।
3. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित होगी।
4. लोकतंत्र, नागरिकता के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के महत्त्व को समझेंगे।

3.2 विषय विवेचन

3.2.1 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य व उद्देश्य

प्रस्तावना :

लक्ष्य के अभाव में कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। कार्य को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए लक्ष्य एवं उद्देश्य का निर्धारण जरूरी है। प्रत्येक विषय के लक्ष्य एवं उद्देश्य पाठ्यक्रम के सामान्य लक्ष्य एवं उद्देश्यों पर आधारित होते है। सामान्य लक्ष्य एवं उद्देश्य की प्राप्ति में विषयों के लक्ष्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण छात्रों को सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से कुशल नागरिक बनाने में सहायक होता है।

1) नागरिकता

सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य उत्तम नागरिकों का निर्माण करना है। अपने समय की समस्याओं का ज्ञान- सभ्यता पर विज्ञान का प्रभाव के प्रति जागरूकता, आर्थिक जीवन के लिए तत्परता, निर्णय क्षमता, मानव की

आवश्यकता-आकांक्षा- भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, लोकतान्त्रिक जीवनपद्धति, स्वतंत्रता एवं समानता पर निष्ठा, नए तथ्य-विचारों की ग्रहणशीलता आदि गुणों की प्राप्ति उत्तम नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण है। सामाजिक अध्ययन का शिक्षण उक्त गुणों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करता है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण से उत्तम नागरिकता की प्राप्ति संभव है।

2) सामाजिक चरित्र विकास

सामाजिक अध्ययन सामाजिक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। इसकी सहायता से छात्रों में सामाजिक चरित्र का विकास संभव है। समुदाय की सामाजिक जीवन एवं आदर्शों का ज्ञान सामाजिक विज्ञान की सहायता से प्राप्त होता है। सामाजिक शिक्षा का निर्माण, उत्तरदायित्व की भावना विकास, मानवीय सम्बन्धों की समझदारी,आदि गुणों का विकास कर सामाजिक चरित्र का विकास करना सामाजिक विज्ञान शिक्षा का उद्देश्य है।

3) सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान

सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करना सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को न केवल सामाजिक समस्याओं से ही अवगत कराना है बल्कि समस्याओं के समाधान के लिए तत्परता एवं कौशल का विकास भी करना है। विद्यार्थी के अन्दर सामाजिक चेतना का उदय ही शिक्षा का प्रारम्भ है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करके शिक्षा प्रक्रिया को अग्रसर करता है।

4) वर्तमान को स्पष्ट करना

जेम्स हेमिंग के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वर्त्तमान समस्याओं की उत्तम समझदारी प्रदान करना है।" आधुनिक विश्व तथा सभ्यता के ज्ञान को सामाजिक विज्ञान शिक्षण द्वारा प्रदान किया जाता है। सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों को वर्तमान स्थिति से अवगत कराना है।"

5) विभिन्न वृत्तियों तथा कौशलों का विकास

सफल सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए विभिन्न वृत्तियों तथा कौशलों का विकास करना सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है। **जे. एफ. फोरेस्टर** के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य तथ्यात्मक सूचनाओं को संगृहीत करने की अपेक्षा मानदंडो, वृत्तियों, रुचियोंतथा कौशलों का निर्माण करना है।"

6) अपनेपन की भावनाओं का विकास

मानवीय सम्बन्धों का परिचय कर छात्रों में अपनेपन की भावनाओं का विकास करना सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य है। मानवीय सम्बन्धों का तथ्यात्मक ज्ञान के साथ परिस्थितियों का अर्थ स्पष्ट करता है।

7) परस्परावलंबन की भावना का विकास

भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण और परस्पर निर्भरता का ज्ञान सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है। आज कोई व्यक्ति या राष्ट्र आत्मनिर्भर नहीं है। सभी एक दूसरे पर निर्भर है। इस निर्भरता के बिना कोई अपना कार्य नहीं कर सकता।

8) अंतरराष्ट्रीय सदभावना का विकास

मानवीय सम्बन्ध एवं अपनेपन की भावना का विकास करना सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है। विश्व के तनावपूर्ण वातावरण में शांति निर्माण करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सदभाव का विकास करना सामाजिक शिक्षण का उद्देश्य है। एडम्स वेस्ले के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन के शिक्षण द्वारा छात्रों में उन शक्तियों का विकास किया जाता है जो विश्व शांति स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है।

9) वातावरण का ज्ञान

व्यक्ति के विकास पर वातावरण का प्रभाव होता है। खान-पान, रहन–सहन, वेश-भूषा, व्यवसाय आदि का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। वातावरण व्यक्ति का महान शिक्षक है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण व्यक्ति को भौतिक तथा सामाजिक ज्ञान प्रदान करता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण छात्रों को उसके आस-पास के वातावरण का ज्ञान प्रदान करता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए-

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य व उद्देश्य बताइए?

3.2.2 माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषय सम्मिलित है। सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम छात्रों को समाज के पास लाकर समाज का सकारात्मक परीक्षण करने में सक्षम बनाता है। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण के द्वारा छात्रों को समाज एवं राष्ट्र के विकास के अनुकूल बनाया जाए। सामाजिक विज्ञान का महत्व रचनात्मक कार्य की नींव तैयार करने में उपयुक्त है। छात्रों में स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक सम्मान, विविधता आदि मानवीय गुणों के प्रति सम्मान की भावना का विकास करने का दायित्व सामाजिक विज्ञान पर है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण का पाठ्यक्रम रुचिपूर्ण एवं आनंददायक होना जरूरी है। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य उपयोगितावादी प्रकृति का है। राजनीति विज्ञान की सहायता से संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिक का निर्माण कर सकते है। ऐतिहासिक और समकालीन विषय पर चर्चा का आधार स्थान इतिहास विषय है।

माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समकालीन भारत, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषय लिए गए है। सामाजिक–आर्थिक चुनौतिया की जानकारी हासिल करने पर समकालीन भारत में विशेष ध्यान दिया है। आदिवासी, दलित एवं हासिए समुदाय को विकास की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया गया है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान का अध्ययन किया गया। आधुनिक विश्व के सन्दर्भ में स्वतंत्र भारत राष्ट्र के विकास को पढ़ाया जाएगा। संरक्षण एवं पर्यावरण सम्बन्धी सरोकारों का अध्ययन किया जाएगा। राजनीति विज्ञान में संवैधानिक मूल्यों (न्याय, स्वतंत्रता, समता, बंधुभाव, भाईचारा) के संरक्षण एवं संवर्धन पर बल दिया है। अर्थशास्त्र विषय का परिचय इसी स्तर पर छात्रों को हो रहा है।

उच्च माध्यमिक स्तर पे छात्र अपनी रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार विषय क्षेत्र चुन सकते है। माध्यमिक स्तर एवं उच्च शिक्षा का दुवा माध्यमिक शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा का विकास एवं उच्च शिक्षा का आधार बनता है। इस स्तरपर छात्र पारंपरिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का चुनाव कर सकते है। सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य पाठ्यक्रम में सही विकल्पों को चुनाव कर सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोवैज्ञानिक आदि विषय सम्मिलित है। व्यावसायिक शिक्षा और लेखाशास्त्र आदि विषय वाणिज्य के अन्तर्गत हो सकते है। 1975 की पाठ्यचर्या की रुपरेखा में कहा गया था, "प्रत्येक विषय की आवश्यक इकाईयों की पहचान करके उन्हें एक समग्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए "फिर भी सामाजिक विज्ञान विषय अलग-अलग विषयों के रूप में पढ़ाया जाता था। एन.सी.ई.आर.टी. ने कक्षा छह से दस तक के लिए इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र विषय की स्वतंत्र पाठ्यक्रम तैयार किया है। इन विषयों को सामाजिक विज्ञान कहते है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2000 के अनुसार छह से दसवी कक्षा के लिए सामजिक विज्ञान की स्वतंत्र पाठ्यपुस्तकें निर्माण की गयी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 (राष्ट्रीय फोकस समूह) के अनुसार सामाजिक विज्ञान को बौद्धिक और रोजगार अनुकूल बनाने का प्रयास किया गया। सामाजिक विज्ञान सामाजिक, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक कौशल छात्रों को प्रदान करता है। भारतीय संविधान में अंतर्निहित मूल्यों पर अधिष्ठित समाज के निर्माण में विशेष महत्व रखता है। समाज के सक्रिय एवं चिन्तनशील सदस्य बने, जीवनशैली और सांस्कृतिक रीतिरिवाजों का सम्मान करे, विचार, संस्था एवं परम्पराओं की जाँच पड़ताल करें, सामाजिक कौशलों का विकास करे, सामाजिक मूल्यों का संवर्धन यह सामाजिक विज्ञान का उत्तरदायित्व है।

- माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक और अवधारणात्मक क्षमता का विकास करना है।
- आधुनिक तथा समकालीन भारत तथा विश्व के सन्दर्भ में आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तन और विकास की समझ विकसित करें।
- विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों तथा चुनोतियों की आलोचनात्मक जाँच करे।
- लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण में दायित्व को समझे।
- संवैधानिक दायित्व को निभाने में दायित्व को समझे।
- विश्व अर्थव्यवस्था और राजनीति के सन्दर्भ में भारत के विकास एवं परिवर्तन को समझे।
- प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता की सन्दर्भ में पर्यावरण और संसाधनों के न्यायपूर्ण उपभोग को समझे।

माध्यमिक स्तर पर मुख्य बल समकालीन भारत पर होगा और छात्रों को सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों की समझ विकसित करायी जाएगी। हासिए के समुदाय की चर्चा अन्य समुदाय के परिप्रेक्ष्य में किया जाएगा। जिससे छात्रों को दैनिक जीवन से जोड़ा जाए। इतिहास में आधुनिक विश्व के सन्दर्भ में समकालीन भारत के आयामों का अध्ययन किया जा सकता है। पर्यावरण और संरक्षण सम्बन्धी आलोचनात्मक मूल्यांकन की क्षमता विकसित करना। भारतीय संविधान में अन्तर्निहित तत्वों (न्याय, स्वातंत्रता, समता, बंधुता) की समझ बढ़ाना। माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र का जनसाधारण परिप्रेक्ष्य में चर्चा होगी। आर्थिक समानता के परिप्रेक्ष्य में समझ बढानी होगी। उच्च माध्यमिक स्तर पर अदययन के लिए विषय के चयन में सहायक बनाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों की आवश्यकता और रूचि के अनुसार विषय क्षेत्र का चुनाव कर सकते है। यह छात्रों को रोजगाराभिमुख बनाता है। व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा की नींव उच्च माध्यमिकस्तर पर रखी जाती है। शिक्षा में लचीलापन और विविधता पूर्ण बनता है। विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृति एवं पृष्ठभूमि के छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम बनाया गया। सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य के विभन्न पाठ्यक्रम की उपलब्धता के अनुसार छात्र सही विकल्प का चुनाव कर सकते हैं। उच्च माध्यमिक स्तरपर सामाजिक विज्ञान में राजनीति शास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान आदि विषय सम्मिलित होंगे। वाणिज्य में व्यावसायिक शिक्षा और लेखाशास्त्र प्रमुख अंग है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम के निम्न उद्देश्य है।

❖ छात्रों की रूचि एवं अभिवृत्ति के अनुसार उचित पाठ्यक्रम या व्यवसाय चयन में सहायता करना।

❖ विभिन्न स्तर पर उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।

❖ समस्या समाधान करने की योग्यताओं को विकसित करना।

❖ सूचनाओं को संशोधित करने के विभिन्न तरीको से छात्रों को परिचित करना।

माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकें (राजनीति शास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान) सम्मिलित होंगे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए।

माध्यमिक व उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम व पुस्तकों की जानकारी दीजिए।

3.2.3 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के उपागम

सामाजिक विज्ञान शिक्षण पाठ्यक्रम की छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। पाठ्यचर्या के आधारभूत तत्वों की अधिकांश पूर्णता सामाजिक विज्ञान शिक्षण द्वारा होती है।

पाठ्यक्रम का अर्थ :

'करिकुलम' (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द क्युरेरे (Currere) से हुई है। जिसका अर्थ है –'दौड़ का मैदान' (Race-Course)। इस प्रकार पाठ्यक्रम दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ते है।

"पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक यंत्र है, जिससे वह अपनी सामग्री (विद्यार्थी) को अपने आदर्श (लक्ष्य) के अनुसार अपने कलागृह (विद्यालय) में मोड़ता है।"

-

कनिंघम

"पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित है, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।"

-

मुनरो

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाजोपयोगी बनाना है। सफल शिक्षण मूल सामान्य सिद्धांतो पर आधारित है।

1) जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त

विषय वस्तु का छात्रों के वास्तविक जीवन के साथ सम्बन्ध स्थापित करना जरूरी है। **जॉन ड्युई** के अनुसार, 'शिक्षा जीवन है।' छात्रों के पर्यावरण से विषयवस्तु का सम्बन्ध प्रस्थापित करने से ही विषयवस्तु का ज्ञान अधिक सुगमता और गति से प्राप्त कर सकते है। सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का विश्लेषक होने के कारण वास्तविक जीवन का विषयवस्तु से सम्बन्ध प्रस्थापित करना जरूरी है। तात्पर्य, सामाजिक विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम वास्तविक जीवन से सम्बंधित होना चाहिए।

2) रूचि का सिद्धान्त

सफल शिक्षा के लिए विषयवस्तु के प्रति रूचि विकसित करना जरूरी है। छात्रों में विषयवस्तु की रूचि से ही शिक्षण सफल होता है। जिस कार्य में रूचि होती है वह कार्य अपनी सारी शक्तियों का उपयोग कर पूरा करता है। रूचि विकसित होने पर ही छात्र विषय वस्तु का तल्लीनता से अध्ययन करेंगे। सामाजिक विज्ञान शिक्षण को सफल बनाने के लिए छात्रों में रूचि विषय वस्तु के प्रति रूचि होना जरूरी है। विभिन्न साधनों की सहायता से विषयवस्तु में छात्रों की रूचि निर्माण

कर सकते है। **पिन्सेंट** के अनुसार "जब तक छात्रों में सक्रिय रूचि न होगी, तब तक शिक्षण का सर्वोत्तम कार्य नहीं होगा।"

3) प्रेरणा का सिद्धान्त

कियाशीलता उत्पन्न करने वाली आन्तरिक शक्ति प्रेरणा है जिससे व्यक्ति अपने लक्ष्य की और अग्रसर होता है। प्रेरित होने पर छात्र क्रियाशील होकर अपने कार्य में रूचि लेता है। उसका सकारात्मक परिणाम ज्ञानार्जन पर होता है। नया ज्ञान प्रेषित करने से पूर्व सामाजिक विज्ञान के शिक्षक को उन्हें सिखाने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। विभिन्न साधन एवं तंत्रों की सहायता से छात्रों को शिक्षक प्रेरित कर सकते है।

4) क्रिया का सिद्धान्त

शिक्षा में क्रियाशीलता का महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में छात्रों को क्रियाशील बनाने के विभिन्न अवसर है। क्रियाशीलता शिक्षा का मुलभूत एवं मनोवैज्ञानिक आधार है। छात्रों को सक्रिय एवं समाज कुशल व्यक्ति बनाने के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षक को सदैव प्रयास करना चाहिए। **रायबर्न** के अनुसार, "छात्र की क्रियाशीलता का सिद्धान्त सम्पूर्ण शिक्षण में सर्वप्रथम महत्व रखता है।"

5) निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त

शिक्षा सोदेश्य क्रिया है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उदेश्यों की पूर्णता पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं से की जा सकती है। निश्चित उद्देश्यों की पूर्णता के लिए निश्चित एवं नियोजित प्रयास की जरूरत है। शिक्षक एवं छात्रों को सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए।

6) चयन का सिद्धान्त

छात्रों की योग्यता, रूचि, आवश्यकता के अनुसार उपयोगी एवं लाभप्रद ज्ञान का चयन कर छात्रों के लिए उपलब्ध करना आवश्यक है। **रायबर्न** के अनुसार, "चयन का सिद्धान्त अति महत्वपूर्ण है और शिक्षक के अच्छे चयन की योग्यता पर उसके कार्य की सफलता बहुत कुछ निर्भर रहती है।" सामाजिक विज्ञान शिक्षण में चयन की योग्यता का होना बहुत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

7) नियोजन का सिद्धान्त

नियोजन श्रम, समय एवं पैसा बचाता है। ज्ञान को छात्रों के सामने प्रस्तुत करने से पूर्व उसका नियोजन जरूरी है। शिक्षक के अध्यापन को सफल बनाने में नियोजन महत्वपूर्ण है। कक्षा अध्यापन से पूर्व पाठ्यांश, पाठ्य उद्देश्य, अध्यापन विधि एवं तंत्र, शैक्षिक साधन सामग्री, फलक लेखन आदि का पूर्व नियोजन जरूरी है।

8) विभाजन का सिद्धान्त

विषयवस्तु को सुगम बनाने के लिए उनका प्रस्तुतीकरण क्रमिक सोपानो में होना चाहिए। सोपानो की रचना क्रमबद्ध ढंगसे होनी चाहिए जिससे वह एक सोपान से दूसरे सोपान तक पहुँच सके।

9) लोकतान्त्रिक व्यवहार का सिद्धान्त

लोकतान्त्रिक पर्यावरण का निर्माण करना सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रधान उद्देश्य है। लोकतान्त्रिक व्यवहार यह जीवन की विधि है। लोकतान्त्रिक व्यवहार का अर्जन जीवन में करना आज के युग में महत्वपूर्ण है। इसकी शुरुआत कक्षा एवं विद्यालय के वातावरण से होती है। शिक्षक का छात्रों के साथ का वर्ताव मित्र, सहयोगी एवं पथप्रदर्शक के रूप में होना चाहिए। कक्षा में छात्रों को लोकतान्त्रिक व्यवहारों की अनुमति शिक्षक द्वारा प्राप्त होनी चाहिए। कक्षा में और कक्षा के बाहर शिक्षक का वर्ताव पक्षपात रहित होना चाहिए। सामाजिक विज्ञान शिक्षण की सहायता से छात्रों में सहयोग, सहानुभूति, स्वतंत्र विचारणा, निर्णय क्षमता आदि गुणों का विकास कर सकते है।

10) आवृत्ति का सिद्धान्त

छात्रों को अर्जित किए ज्ञान को स्थाई बनाने के लिए आवृत्ति की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने आवृति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। छात्रों की आवश्यकता के अनुसार आवृत्ति के सिद्धान्त का पालन कर सकते है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम विकास के उपागमों की जानकारी दीजिए।

3.2.4 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन

सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों में तथ्यों को लेकर एक आलोचनात्मक समझ को विकसित करना है। पाठ्यपुस्तकों के प्रति विद्यार्थियों के अन्दर एक ऐसी समझ का विकास करना है कि पाठ्य-पुस्तकें ज्ञान का एक स्रोत है न कि उसमें लिखा ज्ञान अंतिम ज्ञान है। विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों में कुछ ऐसी गतिविधि करवानी चाहिए जिससे वे पाठ्य पुस्तकों को एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए किसी भी पाठ में विद्यार्थियों से उसके जेंडर, भाषा, समुदाय व क्षेत्र की संवेदनशीलता को जांचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जिससे उनके अन्दर एक आलोचनात्मक समझ का विकास होगा।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, इतिहास आदि विषय सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सम्मिलित है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण मानवीय सम्बन्ध का आधारशील विषय है। **शैक्षिक अनुसन्धान विश्वकोश** के अनुसार, "किसी के लिए यह निश्चय करना उचित नहीं है कि सामाजिक अध्ययन इतिहास, भूगोल तथा नागरिकशास्त्र का गणितीय योग मात्र है। निश्चय ही यह इन विषयों से पर्याप्त सामग्री प्राप्त करता है, परन्तु उसी सामग्री को ग्रहण करता है जो मानव के वर्तमान तथा दैनिक जीवन के सम्बन्धों को स्पष्ट करती है। ....यह सावधानीपूर्वक नोट किया जाना चाहिए की इसका स्वरुप परम्परागत विषय जैसा नहीं है, वरन् एक क्षेत्र–सा है।" सामाजिक अध्ययन शिक्षण में आधुनिक समस्याओं, अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध, नागरिकता की शिक्षा,विवादास्पद मामले, तत्कालीन घटनाओं तथा समसामयिक मामलों को भी स्थान प्रदान किया है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण का क्षेत्र व्यापक है। निकलसन तथा राईट के अनुसार, "वस्तुत: इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और सम्पूर्ण विश्व में मानव का वर्तमान सामाजिक जीवन ही इसका मूल है।"

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मानदण्ड

प्रकाशन सामग्री

पुस्तक का नाम, लेखक या लेखकगण, प्रकाशक, पृष्टों की संख्या, पुस्तक का मूल्य आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के प्रकाशन से सम्बंधित मानदण्ड है।

यांत्रिक तत्व

पुस्तक का आधार तथा साज-सज्जा, जिल्द की सुदृढता, कागज, छपाई, मारजीन की चौडाई आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के यांत्रिक तत्व से सम्बंधित मानदण्ड है।

संगठन

पाठों सामान्य योजना, पाठों का तर्कसंगत विभाजन, पाठों की पूर्णता, सारांश आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के संगठन से सम्बंधित मानदण्ड है।

प्रस्तुतीकरण

शैली, भाषा, स्थूलता, निष्पक्षता, प्रायोगिक शब्द आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के प्रकाशन से सम्बंधित मानदण्ड है।

उदाहरण

उदाहरणों की शुद्धता, गुण, छात्रों के लिए उपयुक्त उदाहरण आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के उदाहरण से सम्बंधित मानदण्ड है।

चित्र, मानचित्र, रेखाकृति, ग्राफ तथा चार्ट

संख्या, शुद्धता, स्थूलता, आकार, उपयुक्तता तथा आकार, स्पष्टता आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के साधन सामग्री से सम्बंधित मानदण्ड है।

प्रश्न-

पाठ्यवस्तु से सम्बन्ध, पाठ्यवस्तु की विस्तृतता, शिक्षक तथा छात्रों की दृष्टि से महत्व, पाठ्यवस्तु की प्रेरणात्मक शक्ति, पाठ्यवस्तु की व्यवस्थापन आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के साधन सामग्री से सम्बंधित मानदण्ड है।

परिशिष्ट तथा अनुक्रमणिका

व्यवस्थापन, विषय-सूची, व्यावहारिकता, पूर्णता, महत्व आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के साधन सामग्री से सम्बंधित मानदण्ड है।

विषय अध्ययन योग्य पुस्तकें

व्यावहारिकता, शिक्षण के लिए महत्त्व, छात्र के लिए महत्व आदि सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के साधन सामग्री से सम्बंधित मानदण्ड है।

उपरोक्त मानदंडो के आधार पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के मानदण्ड स्पष्ट कीजिए।

3.2.5 लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के निहितार्थ

15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी मिली। 150 साल की गुलामी समाप्त होकर स्वतंत्रता का नया सूर्योदय हुआ। अब एक तरफ लोगों को अधिकार दिए गए तथा लोगों के उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही भी तय की गई। आदर्श राष्ट्र के निर्माण की जिम्मेदारी कंधो पर आई। आजादी के उपरांत भारत ने लोकतंत्र का स्वीकार किया। मानवाधिकार (सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक) प्रदान कर न्याय, स्वतंत्रता, समता, बंधुता आदि मूल्यों का निर्वाह करने वाले नागरिक

का निर्माण करना राष्ट्र का प्रधान उद्देश्य रहा है। भारतीय नागरिकों को अपने अधिकार प्राप्ति के साथ कर्तव्यों का निर्वाह भी करना है। देशवासी जब सुयोग्य नागरिक बनेंगे तभी स्वाधीनता का सपना पूरा होगा। यह कार्य विदयालयों को सौंपा गया। शिक्षा का यह दायित्व बना कि विद्यालयों से सुयोग्य नागरिक बनकर छात्र बाहर निकले। समाज, देश, राष्ट्र, विश्व को उन्नति की ओर अग्रसर बनाने वाला सुयोग्य नागरिक का निर्माण विद्यालयों में हो। साम्प्रदायिकता, जातीयता, गरीबी, बेईमानी आदि को नष्ट करने के लिए नागरिकता की शिक्षा आवश्यक है। लोकतंत्र एवं मानवाधिकार की रक्षा सुयोग्य नागरिक कर सकता है। प्रेम, अहिंसा, बंधुत्व आदि मूल्यों को वैश्विक बनाने में भारत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैश्विक शांति एवं अन्तरराष्ट्रीय सद्भाव बनाये रखने में भारत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस कार्य हेतु सुयोग्य, सुजान एवं उदार दृष्टिकोण वाले नागरिक की नितांत आवश्यकता है। यह कार्य सफलतापूर्वक शिक्षा द्वारा किया जा सकता है। शिक्षा के पुनर्निर्माण में भारतीय संविधान में अन्तर्निहित तत्वों के संस्करण में विशेष ज्ञान रखा गया। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए मानव को मूल अधिकारों की प्राप्ति, लोकतान्त्रिक शासनप्रणाली, सुयोग्य नागरिक के निर्माण के लिए योग्य वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा द्वारा इसकी पूर्णता की आवश्यकता है। भारत में स्वतंत्रता के उपरांत शिक्षा में सुधार हेतु विविध शिक्षा आयोग एवं समितियों का गठन किया गया। **माध्यमिक शिक्षा आयोग** ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है, "भारत ने अभी हाल में राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की और उसने पर्याप्त विचार–विमर्श के पश्चात स्वयं को धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया। इसलिए शिक्षा द्वारा नागरिकों में ऐसी आदतों, अभिरुचियों और चारित्रिक गुणों का विकास किया जाए, जिससे वे लोकतंत्रीय नागरिकता के दायित्वों का भली प्रकार से निर्वाह कर सके और उन विघटनकारी प्रवृत्तियों को रोक सकें जो व्यापक राष्ट्रीय एवं धर्मनिरपेक्षता के दृष्टिकोण के विकास में बाधक है।"

लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार का अर्थ

"लोकतंत्र वह शासन प्रणाली है, जहाँ शासक वर्ग अपेक्षाकृत राष्ट्र का बड़ा भाग है।"

प्रो. डायसी

"जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन ही लोकतंत्र है।"

अब्राहम लिंकन

"नागरिकता राज्य में मनुष्य का स्थान है, क्योंकि राज्य समाज की एक स्थाई संस्था है और मनुष्य को अपने साथियों के साथ सदैव सुसंगठित सम्बन्धों के साथ रहना चाहिए। इसलिए नागरिकता को शैक्षिक आदर्श के क्षेत्र के बाहर नहीं निकला जा सकता है।"

एच. एच. हॉर्न

"नागरिकता वह वस्तु नहीं है जिसको किसी इकाई या विषय के रूप में पढ़ाया जा सकता है, वरन यह तो जीवनयापन का एक ढंग है। हमारे समक्ष वास्तविक प्रश्न यह नहीं है कि एक उत्तम नागरिक क्या जाने वरन यह है कि एक उत्तम नागरिक क्या करता है और उसे ऐसा करने के लिए क्या जानना चाहिए?"

अमेरिकन विद्यालय प्रबंधक समुदाय

लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के निहितार्थ

लोकतंत्र और मानवाधिकार की रक्षा के लिए नागरिकता की शिक्षा आवश्यक है। समाज शिक्षा का केंद्र विद्यालय को माना जाता है। समाज शिक्षा में उत्तम एवं आदर्श नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। **प्रो. बाईनिंग तथा बाईनिंग** के अनुसार, " विद्यालय वर्तमान परिस्थितियों तथा हमारे आधुनिक समाज में फैले हुए अन्याय, अश्लीलता एवं भ्रष्टाचार की अवहेलना नहीं कर सकते है। उनको छात्रों को प्रभावशाली ढंग से प्रशिक्षित करना चाहिए, जिससे भावी नागरिक सुशासन में सक्रिय भाग तथा रूचि ले सकें और साथ ही वे अपने सामाजिक सम्बन्धों में नैतिकता का उपयोग कर सकें।" शिक्षा आयोग ने भारतीय स्थिति के सन्दर्भ में लिखा है कि, "भारत की एक निराली स्थिति है, क्योंकि उसके

यहाँ अनासक्ति, सहिष्णुता अनेक बार यह बहुमूल्य भुला दी गयी तथा हम निराशावाद, भय, अनिष्ट कथन, वैमनस्य तथा हानिकारक आलोचना की मनोवृत्ति में फंस गए। अत: इस समय आवश्यकता इस बात की है कि शांति और स्वतंत्रता, सत्य और करुणा के महान आदर्श के लिए जीवित रहने के रूप में हमारा नया अभिमान और गहरी आस्था अभिव्यक्त हो।"

इससे यह स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक परम्पराओं के साथ समाज को नए ढांचे में उन्नति की ओर अग्रसर बनाने के लिए सुयोग्य नागरिक निर्माण में शिक्षण-प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है। सुयोग्य नागरिक ही लोकतंत्र और मानवाधिकार का संरक्षण एवं संवर्धन कर सकता है।

1) आर्थिक प्रशिक्षण :

सुयोग्य नागरिक के लिए जीविकोपार्जन की वैयक्तिक क्षमता का विकास होना आवश्यक है। स्वयं की जीविकापार्जन स्वयं कर सके ताकि वह समाज पर बोझ न बने। विभिन्न शिक्षण-प्रशिक्षण एवं तकनीकी संस्थाओ की सहायता से आर्थिक प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराकर छात्रों को आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते है। जब प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सक्षम होगा तभी राष्ट्र सक्षम होगा।

2) सामाजिक प्रशिक्षण :

सहयोग, सहिष्णुता, सामाजिक संवेदना, अनुशासन, सामाजिक सक्रियता, समाजसेवा की भावना आदि गुणों के विकास छात्रों में होने के लिए सामाजिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। संवैधानिक मूल्य एवं अन्तरराष्ट्रीय मानवाधिकार मूल्यों के संरक्षण एवं सवर्धन के लिए समाज शिक्षा की आवश्यकता है। विद्यालयों के साथ परिवार, समुदाय, सामाजिक समूह, पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है।

3) सांस्कृतिक प्रशिक्षण :

पुरखों द्वारा राष्ट्रीय विरासत, ऐतिहासिक परंपरा, आध्यत्मिक शक्ति एवं संस्कृति की रक्षा करना आदर्श नागरिक का परम कर्तव्य है। शालेय एवं सहशालेय गतिविधियों के साथ-साथ ऐतिहासिक वास्तु एवं वस्तुएं, अजायबघर, सांस्कृतिक केन्द्रों का अवलोकन उपयुक्त रहेगा। आदर्श नागरिक का संस्कृति रक्षक होना आवश्यक है।

4) राजनैतिक प्रशिक्षण :

विश्व का प्रत्येक राष्ट्र चयनित शासन प्रणाली के अनुसार शासन व्यवस्था चलाता है। विश्व के अधिकांश देशों ने लोकतंत्र को स्वीकार किया है। भारत में स्वीकृत की गयी लोकतान्त्रिक व्यवस्था केवल शासन प्रणाली ही नहीं बल्कि जीवन प्रणाली भी है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को सफल बनाने के लिए राजनैतिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। भारतीय संविधान में अन्तर्निहित लोकतान्त्रिक एवं मानवाधिकार से सम्बंधित तत्वों का परिपोष शिक्षा की सहायता से नागरिको मे होना आवश्यक है। **हक्सले** का कहना है कि, " यदि स्वतंत्रता और लोकतंत्र आपका लक्ष्य है तो लोगो को स्वशासन की कला सिखानी पड़ेगी।

व्यक्ति को लोकतांत्रिक मूल्य, मानवाधिकार के तत्वों का पालन करने वाला आदर्श नागरिक बनाने में सामाजिक विज्ञान शिक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। **प्रो. बाईनिंग तथा बाईनिंग** के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन को सामाजिक तथा नागरिक प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रमुख दायित्व अपने ऊपर लेना चाहिए, परन्तु पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय को इसके लिए योगदान देना चाहिए।" सामाजिक विज्ञान शिक्षक पर यह दायित्व सर्वाधिक है कि लोकतांत्रिक मूल्य, मानवाधिकार के तत्वों का पालन करने वाला आदर्श नागरिक निर्माण हो। स्वशासन, सामाजिक क्रियाएँ, अभिनयात्मक क्रियाएँ, साहित्यिक क्रियाएँ, समुदाय संगठन, खेलकूद गतिविधियाँ आदि की सहायता से लोकतांत्रिक मूल्य, मानवाधिकार के तत्वों का पालन करने वाला आदर्श नागरिकता के गुणों को विकसित किया जा सकता है।

3.3 कार्य आवंटन

1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य व उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास के उपागम बताइए।

3.4 क्रियाएँ

1. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन कीजिए।
2. लोकतंत्र, नागरिकता और मानवाधिकार के विमर्श और सामाजिक विज्ञान शिक्षक के निहितार्थ

3.5 संदर्भ ग्रन्थ

- कुमारी, सुशीला, (2010), "इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- जैन, आमिर चंद, (2013), "सामाजिक ज्ञान शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), "सामाजिक अध्ययन का शिक्षण", आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), "इतिहास शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- पांडये, रमाकांत, (2012), "इतिहास शिक्षा", दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन।
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), "समाज अध्ययन –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), "भूगोल –शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- सक्सेना, राधारानी, (2013), "नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), "नागरिकशास्त्र शिक्षण", जयपुर, अपोलो प्रकाशन।
- Cranston, M. (1973), 'What are Human Rights?', London, Bodley Head.
- Gaikwad, Pradip (Edited) (2012), 'Indian Constitution – Architect Dr. B. R. Ambedkar', Nagpur, Sugat Publication.
- Kohli, A. S. (2004), 'Human Rights and Social Work', New Delhi, Kanishk Publishers.

इकाई4 : सीखना-सिखाना

4.0 प्रस्तावना

4.1 शिक्षण के उद्देश्य

4.2 विषय विवेचन

4.2.1सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ

4.2.1.1पाठ्यपुस्तक विधि

4.2.1.2 व्याख्यान विधि

4.2.1.3 कहानी विधि

4.2.1.4 नाट्य रूपांतरण विधि

4.2.1.5 तुलनात्मक विधि

4.2.2 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सम सामयिक राजनैतिक घटनाओं का प्रयोग

4.2.3 पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ

4.2.3.1 क्षेत्र भ्रमण

4.2.3.2 फिल्म स्क्रीनिंग

4.2.3.3 सर्वेक्षण

4.3 कार्य आवंटन

4.4 क्रियाएँ

4.5 संदर्भ ग्रन्थ

4.0 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में ज्ञानवर्धन के लिए भाषण एवं पाठ्यपुस्तक विधि, भावनात्मक विकास के लिए अभिनय और भूमिका निर्वाह विधि, कुशलता और योग्यता के लिए प्रयोगशाला विधि, योजना विधि, सामाजिक अभिव्यक्ति और समस्या विधि उपयुक्त मानी जा सकती है। सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में व्यावहारिक रूप से पाठ्यपुस्तक विधि, व्याख्यान विधि, कहानी विधि, नाट्य रूपांतरण विधि, तुलनात्मक विधि आदि महत्वपूर्ण हैं। ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक क्षेत्रों में घटित घटनाओं का समावेश समसामयिक घटनाओं में होता है। छात्र रुचि और कुशलता के विकास के लिए पाठ्यसहगामी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान मंडल, सामाजिक विज्ञान कक्ष, व्याख्यान, परिसंवाद, प्रतियोगिता, सामाजिक सर्वेक्षण, क्षेत्र भ्रमण या पर्यटन, फिल्म स्क्रीनिंग आदि गतिविधियाँ पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ हैं।

4.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे:

i. सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों के बारे में।
ii. सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों के गुण व दोषों के बारे में।
iii. सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता के बारे में।
iv. विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों से अवगत होंगे।

4.2 विषय विवेचन

4.2.1सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ

जॉन एमॉस कॉमेनियस ने कहा कि शिक्षक को अपना अध्यापन कार्य करते समय छात्रों की ज्ञानेन्द्रियों को जागृत करके ज्ञान एवं समझदारी को विकसित करना चाहिए। **रूसो** ने प्रगतिशील शिक्षकों के लिए क्रियाशीलता द्वारा सीखना, प्रयोग द्वारा सीखना, निरीक्षण द्वारा सीखना आदि सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। रूसो के शिष्य **पेस्टॉलॉजी** ने अनुदेशन को मनोवैज्ञानिक बनाने पर बल दिया है। पेस्टॉलॉजी के शिष्य **फ्रोबेल** ने किंडरगार्टन पद्धति को और **हरबर्ट** ने अनुदेशन विधि को जन्म दिया। **मेरिया मोंटेसरी** ने स्व-शिक्षा द्वारा शिक्षा, **फ्रोबेल** ने खेल द्वारा शिक्षा, **जॉन डिवी** ने अनुभव द्वारा शिक्षा को शिक्षा का आधार बनाया है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान को शिक्षार्थी तक पहुँचाना ही नहीं बल्कि शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास है। अधिक से अधिक अनुभव उपलब्ध कराके शिक्षार्थी का विकास संभव है। सामाजिक अध्ययन की शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण विधि का स्थान महत्वपूर्ण है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कर बालकों में वांछित व्यवहारों में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षण विधि उपयुक्त है।

शिक्षण विधि का अर्थ :

"योजना नियोजन तथा निर्देशन वह कला अथवा विज्ञान है जिससे वृहत् सेनाओं के कार्य एवं गति संचालित होती है।"

शब्दकोष

"शिक्षण योजना पाठ की एक सामान्य योजना है जिसमें संरचना अनुदेशन के उद्देश्यों के संदर्भ में अधिगमकर्ता के वांछित व्यवहार तथा योजना के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक नियोजित युक्तियों की रूपरेखा सम्मिलित होती है। पाठ योजना रचना वृहत् विकास योजना का एक अंग होती है।"

स्टोन्स एवं मौरिस

"शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।"

वैस्ले

"शिक्षण पद्धति के द्वारा हम पठन सामग्री को व्यवस्थित करके निष्कर्षो को प्राप्त करते है।"

जॉन ड्युई

"विधि प्रक्रियाओं की वह सुपरिभाषित संरचना है, जिसमें परिस्थितियों की मानको के अनुसार प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।"

थट व गेरबेरिच

"शिक्षक द्वारा संचालित जिन क्रमबद्ध विधियों के सहारे से छात्रों को ज्ञान की उपलब्धि होती है, उस क्रमबद्ध विधियों को शिक्षण विधि कहते हैं।"

"शिक्षण को प्रभावोत्पादक बनाने वाले साधन को शिक्षण विधि कहते हैं।"

"शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बनाई गई नीतियों की शिक्षण योजना को शिक्षण विधि कहते हैं।"

छात्रों के मष्तिष्क, कर्म और भावनाओं के क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन लाना अध्यापन का उद्देश्य होता है। मन, कर्म, हृदय की प्रवृत्तियों से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास शिक्षा से अपेक्षित है। शिक्षक किसी एक विधि का प्रयोग करके अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकते। शिक्षक को अपने उद्देश्यों की अधिकतम पूर्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि का चयन करने के लिए सभी अध्यापन विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। साज-सज्जा, उपागम, विषयवस्तु का संगठन, शिक्षक-छात्र सम्बन्ध, छात्र-छात्र सम्बन्ध, छात्र सहभागिता, सीखने के सिद्धान्त, विचार की स्वतंत्रता, शिक्षा के लक्ष्य, ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित विभिन्न विधियों का निर्माण हुआ है। सामाजिक ज्ञान के अध्यापन की कोई एक सर्वश्रेष्ठ विधि नहीं बताई जा सकती। छात्रों की रुचि, योग्यता, आयु एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षण विधि का चुनाव ही सर्वश्रेष्ठ विधि कहलाती है। **विनिंग** के अनुसार, "सर्वश्रेष्ठ विधि वही है जो अभिरुचि और प्रयत्न को बढ़ावा दे एवं क्रियाशीलता और

अभिक्रमशीलता को विकसित करे, छात्रों के स्वतंत्र चिंतन और निर्णय को उद्दीप्त करे और सहयोग तथा समाजीकरण को स्थापित करे।" ज्ञान वर्धन के लिए भाषण एवं पाठ्यपुस्तक विधि, भावनात्मक विकास के लिए अभिनय और भूमिका निर्वाह विधि, कुशलता और योग्यता के लिए प्रयोगशाला विधि, योजना विधि, सामाजिक अभिव्यक्ति और समस्या विधि उपयुक्त मानी जा सकती है। सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में व्यावहारिकरूप से पाठ्यपुस्तक विधि, व्याख्यान विधि, कहानी विधि, नाट्य रूपांतरण विधि, तुलनात्मक विधि आदि महत्वपूर्ण है।

4.2.1.1पाठ्यपुस्तक विधि

प्रस्तावना

छात्र अनुभव तथा ज्ञान की प्राप्ति प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष ढंग से करते हैं। प्रत्यक्ष रूप से वास्तविक वस्तुओं के बारे में ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। पुस्तक और मौखिक प्रस्तुतीकरण द्वारा अप्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की जाती है। छात्र पुस्तकों में सम्मिलित विचार और मौखिक रूप से किए गये प्रस्तुतीकरण द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान प्राप्ति का एक स्रोत पाठ्यपुस्तक भी है।

परिभाषा

"पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षण की वह प्रक्रिया है, जिसका तत्कालीन उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सूचनाओं की समझदारी प्रदान करना होता है।"

वेस्ले ई. बी.

इस परिभाषा के अनुसार, ज्ञान प्राप्त करने का साधन पाठ्यपुस्तक को माना गया है।

पाठ्यपुस्तक विधि

पाठ्यपुस्तक में दिए हुए विचार या तथ्यों को ज्ञात करने का साधन पाठ्यपुस्तकें हैं। पाठ्यपुस्तक विधि में पठित पाठ की मौलिक आवृत्ति करवाते है। शिक्षक पहले जिन छात्रों को पाठ्यपुस्तक में से कोई पाठ याद करने को कहते थे। दूसरे दिन उसे मौखिक रूप से सुनते थे। इस विधि में पाठ्यपुस्तक को रटाने के बजाए विषय को समझने का प्रयास होता है। पाठ्यपुस्तक का उपयोग पाठ को समझने के लिए किया जाता है। इस विधि से छात्रों में अर्जित ज्ञान को अभिव्यक्त करने की शक्ति विकसित होती है। इस विधि से लेखन कला का भी विकास किया जाता है। इस विधि के अनुसार छात्रों के अध्ययन के लिए पाठ निर्धारित किया जाता है। पाठ के लिखित सारांश पर छात्र-शिक्षक चर्चा परिचर्चा करके विषय की निश्चित धारणा बनाते है। शिक्षक अपना पृथक कार्य निर्धारण पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर करता है। इस विधि की सहायता से ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्य पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री संकलित करनी पड़ती है। इस विधि से छात्र पुस्तकालय का उपयोग करना सीखता है। विभिन्न स्रोतो से सामग्री संकलित करने की आवश्यकताओं से स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जन, स्वाध्ययन की आदत, रुचि का विकास, समझने की शक्ति, चिंतन शक्ति, तर्क शक्ति, निर्णय शक्ति आदि क्षमताओं का विकास पाठ्यपुस्तक विधि से संभव है। पाठ्यपुस्तक विधि से छात्र स्व अध्ययन की प्रेरणा पाते हैं।

पाठ्यपुस्तक विधि द्वारा निर्धारित कार्य छात्रों के व्यक्ति भिन्नता की संतुष्टिदायक और मानसिक क्षमता के अनुकूल होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ अन्य सन्दर्भ साधन एवं सहायक सामग्री का अध्ययन करके निर्धारित कार्य पूरा कर सकेंगे। छात्रों में स्वतंत्र अध्ययन की प्रेरणा विकसित होकर आदत बनाने वाले कार्य का निर्धारण होना चाहिए। यह निर्धारित कार्य छात्रों के जीवन से सम्बंधित हो। चिंतन और आलोचनात्मक दृष्टि को उभारने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जा सकता है। छात्रों में पुस्तकों के उपयोग की प्रेरणा से स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित होती है। शिक्षक को पाठ के सन्दर्भ में उपयुक्त संदर्भ पुस्तकें,पत्र-पत्रिकाएँ छात्रों के ज्ञान वृद्धि के लिए उपलब्ध करना आवश्यक होता है।

पाठ्यपुस्तक विधि के गुण

1. छात्रों में स्वाध्ययन की आदत का निर्माण करती है।
2. छात्रों में अध्ययन की निपुणता बढ़ाती है।
3. छात्रों का दृष्टिकोण पाठ्यपुस्तक से झलकता है।
4. छात्रों का पढ़ने का स्वभाव बनाती है।
5. छात्रों में अभिव्यंजना-शक्ति, स्मरण शक्ति का विकास किया जाता है।
6. तथ्य या विचार को कंठस्थ करने के लिए यह विधि उपयुक्त है।
7. पाठ्यपुस्तक विधि में मितव्ययता, समय बचत, सक्रियता, बोधग्राह्यता, कार्य नियोजन, कार्य निपुणता आदि गुण होते हैं।

पाठ्यपुस्तक विधि के दोष

1. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण निर्माण नहीं करती है।
2. छात्रों के मानसिक स्तर को विस्तृत बनाने में असमर्थ रहती है।
3. यह विधि शिक्षण सूत्रों की उपेक्षा करती है। जैसे – 'सरल से कठिन की ओर', 'मनोवैज्ञानिक से तर्कसम्मत की ओर' आदि।
4. छात्रों में रटने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।
5. कक्षा का वातावरण अरुचिकर व नीरस हो जाता है।
6. छात्रों में पूर्वज्ञान जागृत करने में असमर्थ रहती है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए-

1. पाठ्यपुस्तक विधि के गुण बताईए?
2. पाठ्यपुस्तक विधि के दोष बताईए?

4.2.1.2 व्याख्यान विधि

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से शिक्षण में इस विधि का प्रयोग किया जा रहा है। आज भी शिक्षण विधियों में व्याख्यान विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। उच्च कक्षाओं में इस विधि का अधिकतर उपयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु का चयन और पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतिकरण का ढंग पर व्याख्यान विधि की सफलता निर्भर होती है। व्याख्यान विधि की सफलता के लिए प्रस्तुतकर्ता में तैयारी, योग्यता, सुस्वर होना आवश्यक है। शिक्षक को पूर्ण तैयारी के साथ व्याख्यान छात्रों के समक्ष रखना जरूरी है। छात्रों को प्रश्न पूछकर उन्हें सक्रिय रखना जरूरी है। सामाजिक समस्या, योजना, संस्थाओं पर समग्र चर्चा करने लिए यह विधि उपयुक्त है। शिक्षक अपने कौशल्य से समग्र पाठ्यांश छात्रों के समक्ष रख सकते हैं। तथ्यों तथा धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रतिपादन करना व्याख्यान विधि का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

परिभाषा

"व्याख्यान उन तथ्यों, सिद्धान्तों, प्रत्ययों सम्बन्धों का स्पष्टीकरण है जिन्हें शिक्षक चाहता है कि उसके सुनने वाले समझें।"

रिस्क

"बड़ी कक्षाओं में प्रयोग की जाने वाले पद्धति व्याख्यान एक व्यावहारिक विधि है।"

बाईनिंग एवं बाईनिंग

"व्याख्यान शिक्षण की शास्त्रीय पद्धति है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।"

जेम्स एम. ली.

व्याख्यान विधि

व्याख्यान विधि से छात्रों को अध्ययन में कोई असुविधा न होकर सुबोध तथा सुगम रूप से सिखाया जा सकता है। इस विधि द्वारा शिक्षक इकाई की संक्षिप्त रूपरेखा रख सकता है। व्याख्यान देते समय तैयारी के साथ शिक्षक को विषय के प्रति रूचि तथा उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए। व्याख्यान के साथ-साथ अतिरिक्त स्रोत कैसे उपलब्ध होंगे, इसकी जानकारी छात्रों को देना जरूरी है। विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है। छात्रों को सरल तथा सुबोध बनाने के लिए शिक्षक को उचित प्रयास करना जरूरी है। छात्रों की समय बचत, स्वाध्ययन, नवीन कार्य निर्धारण के लिए इस विधि का पर्याप्त उपयोग करना चाहिए। ऐतिहासिक विषय की प्रस्तावना तथा सारांश के लिए व्याख्यान विधि महत्वपूर्ण है।

व्याख्यान विधि के गुण

1. इकाई की संक्षिप्त रूपरेखा के लिए लाभदायक है।

2. विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है।

4. छात्रों की मानसिक क्रियाएँ होती हैं।

5. ऐतिहासिक विषय की प्रस्तावना तथा सारांश के लिए महत्वपूर्ण है।

6. उच्च कक्षा में व्याख्यान का महत्व अधिक है।

7. छात्रों को कुशल श्रोता बनाने में काफी हद तक प्रोत्साहित कर सकते हैं।

8. यह पद्धति कम व्ययशील है।

9. श्रवण क्षमता, एकाग्रता, चिंतनशक्ति, तार्किक दृष्टिकोण, शैक्षिक कुशलता विकसित होती है।

व्याख्यान विधि के दोष

1. इनमें छात्र निष्क्रिय श्रोता बन सकता है।

2. यह विधि निम्न कक्षा के शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है।

3. छात्रों को सतत सचेतन रखने में असफल है।

4. कुशल शिक्षक का अभाव विधि की सफलता में बाधक होता है।

5. शिक्षण के सैद्धान्तिक पक्ष पर ही यह विधि केन्द्रित करती है।

6. छात्रों के व्यक्तिगत भिन्नताओं को ज्ञान में नहीं लिया जाता।

7. कमजोर छात्रों के लिए यह पद्धति उपयुक्त नहीं है।

8. व्याख्यान पद्धति शिक्षक केन्द्रित पद्धति है।

9. श्रवण आधारित पद्धति होने के कारण छात्रों का ध्यान केन्द्रीकरण लगातार नहीं रहता।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1. व्याख्यान विधि के गुण बताईए?

2. व्याख्यान विधि के दोष बताईए?

4.2.1.3 कहानी विधि

प्रस्तावना

सामाजिक अध्ययन की महत्वपूर्ण विधि कहानी विधि है। अध्यापक केन्द्रित विभिन्न विधियों में कहानी विधि महत्वपूर्ण है। बिना उपकरणों का सहारा लिए सबसे अधिक व्यावहारिक विधि कहानी विधि है। विषयों को छात्रों तक पहुँचाने की क्षमता कहानी विधि में होती है। अधिगम का कार्य रोचक, प्रभावी, सफलतापूर्ण बनाने के लिए यह विधि उपयुक्त है। शिक्षक अपने कौशल्य से छात्रों का अवधान आकर्षित करके पाठ को अधिक रोचक एवं सजीव बनाते है। यह विधि छात्रों की कल्पना तथा कुतूहल की भावना का समाधान करने के लिए उपयुक्त है। इस विधि की सहायता से छात्रों में नैसर्गिक शक्तियों का विकास होता है। लेखक, सुधारक, महानुभाव, वैज्ञानिक, संत, अन्वेषक, सुधारक, कलाकार, विचारक आदि की कहानी छात्रों को सुनानी चाहिए।

परिभाषा

"कहानी एक ऐसी रचना है जिसमे जीवन के किसी अंग अथवा एक मनोभाव को प्रस्तुत किया जाए।"

मुंशी प्रेमचंद

" शिक्षक विषयवस्तु का अध्यापन कहानी की सहायता से करता है, उस विधि को कहानी विधि कहते हैं।"

कहानी विधि

छात्रों को कहानी सुनाने का लक्ष्य ध्यान में रखकर कहानी का चयन छात्रों के आयु के अनुसार होना चाहिए। चयनित कहानी सरल, संक्षिप्त, अर्थपूर्ण, वास्तविक होनी चाहिए। कहानी को क्रमानुसार स्वाभाविक ढंग से सुनाना चाहिए। छात्रों के मानसिक स्तर, स्वाभाविक प्रवृत्ति, अवस्थाएँ, क्रियाशीलता, रुचि के अनुसार कहानी की भाषा, शैली, अभिनय, विषयवस्तु होनी चाहिए। कहानी सुनाते समय श्यामपट, सहायक सामग्री आदि का प्रयोग करके छात्रों को सतर्क तथा सक्रिय बनाये रखना चाहिए। छात्रों में कुतूहल की भावना तथा कल्पना क्षमता अधिक होने से कहानी विधि उन्हें प्रिय होती है। छोटी- छोटी एक-दूसरे से सम्बंधित कहानियाँ कहानी विधि को अधिक प्रभावोत्पादक एवं उपयोगी बनाती है। छात्रों में कल्पना एवं जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए कहानियों का रुचि के अनुसार विवरण महत्वपूर्ण है।

कहानी विधि के गुण

1.छोटे बच्चों के लिए रुचिपूर्ण एवं अवधान केन्द्रीकरण में लाभदायक है।

2. छात्र शीघ्रता तथा सरलता से ज्ञान ग्रहण करता है।

3. छात्रों के भावों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

4. छात्रों की स्मरण, कल्पना, जिज्ञासा, सृजनात्मक चिंतन आदि मानसिक क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।

5. छात्रों में नागरिक तथा सामाजिक गुणों का विकास किया जा सकता है।

6. पाठ्यांश का प्रस्तुतीकरण आकर्षक, रोचक, जीवन, प्रभावी होता है।

7. छात्रों में अभिव्यक्ति के विकास के लिए यह विधि उपयुक्त है।

8. छात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र विकास में सहायक आदर्शों का निर्माण कहानी विधि से संभव है।

कहानी विधि के दोष

1. इस विधि की कल्पनाशीलता छात्रों को अवास्तविक तथा अविश्वसनीय बनाती है।

2. कहानी की निरसता छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

3. यह विधि बड़ी कक्षा के लिए अनुपयुक्त है।

4. कुशल शिक्षक का अभाव विधि की सफलता में बाधक होता है।

5. शिक्षक हावभाव, शुद्ध उच्चारण, कथन कला आदि गुण का अभाव सफलता में बाधक होता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 3

1. कहानी विधिके गुण बताईए?
2. कहानी विधिके दोष बताईए?

4.2.1.4 नाट्य रूपांतरण विधि

प्रस्तावना

छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों के विकास के लिए यह विधि महत्वपूर्ण है। आधुनिक शैक्षिक प्रक्रिया में यह विधि महत्वपूर्ण है। छात्रों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने लिए यह विधि उपयोगी है। इस विधि की सहायता से विषय को वास्तविक एवं रुचिकर बनाया जा सकता है। इस विधि से छात्रों में विषय-ग्राह्यता, आत्मविश्वास, आत्माभिव्यक्ति शक्ति का विकास होता है। सामाजिक विज्ञान अध्ययन में नाट्य रूपांतरण विधि सफल एवं सरल विधि है। सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में इस विधि के अनुरूप योग्य सामग्री उपलब्ध होती है। जैसे- शिवाजी महाराज की आगरा यात्रा, महाराणा प्रताप की जीवनी, टीपू सुल्तान का पराक्रम, संसद भवन की कार्यप्रणाली, ग्रामीण समस्याएं आदि। अभिनय कला से परिचित शिक्षक इस विधि का उचित उपयोग कर सकते है। सामाजिक जीवन की समस्याओं को बोधगम्य रूप से स्पष्ट करने के लिए यह विधि महत्वपूर्ण है।

परिभाषा

“अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है। इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है, उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है।”

नाट्य रूपांतरण विधि के गुण

1. अभिनय कला प्राप्त शिक्षकों के लिए यह विधि उपयुक्त है।

2. सामाजिक जीवन की समस्याओं को बोधगम्य रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।

3. यह विधि सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान करती है।

4. छात्र क्रियाशील रहते हैं।

5. छात्रों के विभिन्न इंद्रियों को कुशल एवं प्रशिक्षित किया जा सकता है।

6. विषय ज्ञान को सरल, बोधगम्य, मनोरंजक बनाकर विषय ग्राह्यता को सुगम बना सकते है।

7. छात्रों में सहयोग, सदभावना, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास किया जा सकता है।

नाट्य रूपांतरण विधि के दोष

1. यह विधि सभी पाठ्यक्रम के शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है।

2. इनमें सभी छात्र सहभागी नहीं होते हैं।

3. यह विधि उच्च कक्षा के शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है।

4.अभिनय कला प्राप्त कुशल शिक्षक का अभाव विधि की सफलता में बाधक होता है।

5. समय सारणी का नियोजन करना कठिन है।

6. अभिनय कला का अभाव, आर्थिक प्रभाव, संवादों की समस्या, समय का अभाव, अभिनायक सामग्री का अभाव आदि कारणों से इस विधि का प्रयोग सम्यक रूप से नहीं हो रहा है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए।

1. नाट्य रूपांतरण विधि के गुण बताईए?
2. नाट्य रूपांतरण विधि के दोष बताईए?

4.2.1.5 तुलनात्मक विधि

प्रस्तावना

तुलनात्मक विधि वह विधि है जिसमें दो या दो से अधिक चीजों की तुलना किया जाता है। उच्च कक्षाओं में तुलना, समानता, विषमता आदि शिक्षण के लिए ज्यादा उपयोगी साबित हो सकते हैं। इस विधि का भी सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोग किया जा सकता है।

परिभाषा

"जिस विधि में दो से अधिक चीजों, घटना, व्यक्ति की तुलना की जाती है, उस विधि को तुलनात्मक विधि कहते हैं।"

तुलनात्मक विधि

विषयवस्तु के अनुसार छात्रों में पाठ्यांश की तुलना करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छात्रों में तुलना करने का काम क्रमबद्ध होना चाहिए। तुलनात्मक अध्ययन छात्रों के समूह बनाकर, प्रतियोगिता का आयोजन कर, श्यामपट का उचित उपयोग कर सफल बना सकते हैं।

तुलनात्मक विधि के गुण

1. छात्रों के मन में जिज्ञासा की भावना विकसित होती है।
2. छात्रों के ज्ञान का स्तर विकसित होता है।
3. छात्रों के नया ज्ञान स्पष्ट होता है।
4. पुराना ज्ञान अधिक स्पष्ट होता है।

तुलनात्मक विधि के दोष

1. प्रायः यह विधि निम्न कक्षा के शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है।
2. कुशल शिक्षक का अभाव विधि की सफलता में बाधक होता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1. तुलनात्मक विधि के गुण बताईए?
2. तुलनात्मक विधि के दोष बताईए?

4.2.2 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में समसामयिक राजनैतिक घटनाओं का प्रयोग

प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम का आवश्यक एवं प्रमुख अंग तत्कालीन मामलों तथा समसामयिक घटनाओं का अध्ययन करना है। आधुनिक विश्व को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करना सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है। गतिमान एवं परिवर्तित विश्व को स्पष्ट करने के लिए छात्रों को आधुनिक मामलों की शिक्षा देना आवश्यक है।

प्रभावशाली नागरिक के निर्माण में समसामयिक घटनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व की जटिल समस्याओं से अवगत कराने के लिए समसामयिक घटनओं का अध्ययन जरूरी है। यह ज्ञान भावी इतिहास के स्वरूप को निर्धारित करने में सहायक है।

समसामयिक घटनाओं का अर्थ (Meaning of Current Affairs)

प्राय: घटित होने वाली खबरों को तत्कालीन घटनाएँ कहते हैं। आधुनिक मामलों के अन्तर्गत तत्कालीन घटनाओं के साथ घटनाओं की पृष्ठभूमि में छिपे विचार विषय सम्मिलित होते हैं। जो घटना अभी घटी है और उसे पाठ्यपुस्तको या पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया है, उसे समसामयिक घटना कहते हैं। ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक क्षेत्रों में तात्कालिक रूप से घटित घटनाओं का समावेश समसामयिक घटनाओं में होता है।

"इस पद के अन्तर्गत घटनाएँ तथा विचार, विषय या मुद्दे दोनों ही आते हैं और यह क्षेत्र में इन दोनों को एकाकी रूप में रखने पर अधिक व्यापक हैं। .... आधुनिक घटना वह है जो घटित हो चुकी है। यह महत्वपूर्ण हो सकती है और महत्वहीन भी।"

जेरोलिमेक

समसामयिक घटनाओं का महत्व

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में समसामयिक घटनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। समसामयिक घटनाओं के अध्ययन से आधुनिक विश्व को सरल एवं स्पष्ट रूप से समझाया जा सकता है। परिवर्तित विश्व के स्पष्टीकरण के लिए समसामयिक घटनाओं का अध्ययन आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम में समसामयिक घटनाओं को सम्मिलित करना आवश्यक है। समसामयिक घटना का समावेश सामाजिक विज्ञान शिक्षण को पूर्णता प्रदान करता है। वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन को सफल बनाने के लिए आधुनिक एवं पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता है। नवीनतम गतिविधियों की जानकारी समसामयिक घटनाओं से प्राप्त कर सकते है। अन्तरराष्ट्रीय सदभावना के विकास के लिए समसामयिक घटनाओं का ज्ञान सहायक होता है। ये परस्पर प्रेम, सहयोग, सहानुभूति आदि भावनाओं के विकास में उपयुक्त होते हैं। मानव समाज के कल्याण एवं उन्नति हेतु विश्व नागरिकता के प्रशिक्षण के लिए समसामयिक घटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

समसामयिक घटनाओं के उद्देश्य (Objectives of Current Affairs)

1) छात्रों के सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
2) सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय महत्व की बातों को जानने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
3) छात्रों में समसामयिक घटनाओं को पढ़ने, सुनने, समझने व मूल्यांकन करने की क्षमता को विकसित करना।
4) सहिष्णुता, सदभावना को समझने एवं मूल्यांकन शक्ति विकसित करना।
5) विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करना।
6) लोकतान्त्रिक नागरिकता के लिए उपयुक्त आदतों, अभिरूचियाँ,आस्था, कुशलताओं का विकास करना।
7) रेडियो, पत्र-पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि द्वारा प्राप्त सूचनाओं का मूल्यांकन की क्षमता विकसित करना।
8) समसामयिक घटनाओं के प्रति रुचि को विकसित करना।
9) छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित करना।
10) छात्रों में पक्षपातरहित, अंधविश्वासरहित विचारों को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।

समसामयिक घटनाओं के चयन में ध्यान देने योग्य बाते :

समसामयिक घटनाओं के चयन में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के शिक्षक के निम्न बाते ध्यान में रखनी चाहिए -

- उपयुक्तता

- विश्वसनीयता
- क्षेत्र
- नवीनता
- उपयोगिता
- महत्ता
- घटित घटना
- परिणाम
- सामयिकता

समसामयिक घटनाओं की शिक्षण विधि

समसामयिक घटनाओं का चयन पाठ्यक्रम में करने के उपरांत उस समसामयिक घटनाओं का शिक्षण छात्रों को देना आवश्यक है। समसामयिक घटनाओं के शिक्षण के लिए विभिन्न शिक्षण विधियाँ एवं प्रक्रियाओं का चयन किया जाता है। सामाजीकृत अभिव्यक्ति, प्रयोगशाला विधि, योजना विधि, व्याख्यान विधि, प्रकरण विधि आदि शिक्षण विधियों का उपयोग समसामयिक घटनाओं के शिक्षण लिए किया जा सकता है। नवीन प्रकरणों पर प्रतिदिन वाद-विवाद, सूचनापट का प्रयोग, विविध क्रियाएं एवं गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। जैसे- वाद-विवाद, गोलमेज सम्मलेन, पैनल चर्चा, साधनों का निर्माण, अभिनय प्रस्तुति, कार्टून निर्माण, स्क्रैप बुक, प्रतिवेदन का निर्माण, आलोचना आदि।

4.2.3 पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ

कक्षा में छात्रों की बढ़ती संख्या के कारण शिक्षक छात्रों की तरफ व्यक्तिगत स्तर पर ध्यान नहीं दे सकता। छात्रों में रुचि, कुशलता के विकास के लिए पाठ्यसहगामी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान कक्ष, व्याख्यान, परिसंवाद, प्रतियोगिता, सामाजिक सर्वेक्षण, क्षेत्र भ्रमण या पर्यटन, फिल्म स्क्रीनिंग आदि गतिविधियाँ पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ हैं।

पाठ्य सहगामी गतिविधियों का अर्थ

"छात्रों में शास्त्रीय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, इन गतिविधियों को पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ कहते हैं।"

पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ

4.2.3.1 क्षेत्र भ्रमण / पर्यटन

सामाजिक विज्ञान की प्रथम पाठ्यपुस्तक स्थानीय वातावरण और सामुदायिक वातावरण प्रयोगशाला है। स्थानीय वातावरण के अध्ययन के लिए भ्रमण या पर्यटन सर्वोत्तम है। समाज का सूक्ष्म अवलोकन इस विधि की सहायता से कर सकते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद क्षेत्र भ्रमण या पर्यटन से ले सकते हैं। स्थानीय समाज के सदस्यों के पारंपरिक सम्बन्ध, रीति-रिवाज आदि का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकते है। भ्रमण या सैर, अध्ययन यात्रा, क्षेत्रीय पर्यटन आदि युक्तियों से शैक्षिक पर्यटन सफल बनाया जा सकता है।

क्षेत्र भ्रमण / पर्यटन के प्रकार :

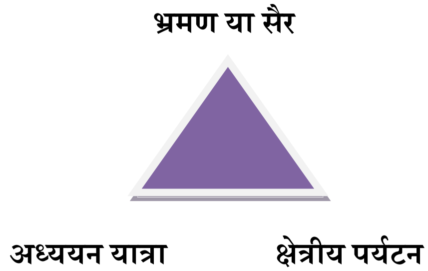

क्षेत्र भ्रमण / पर्यटन का महत्व :

1) विभिन्न विषयोंका ज्ञान प्राप्त होता है।
2) निरीक्षण की सहायता से ज्ञान प्राप्त होने के कारण ज्ञानेन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ती है।
3) छात्रों में शोध वृत्ति का विकास होने के कारण जानकारी प्राप्त करने के लिए खोज करने की क्षमता का विकास होता है।
4) विशिष्ट विषय के सन्दर्भ में विस्तृत एवं अधिक जानकारी प्राप्त होती है।
5) प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होता है।
6) आनन्ददायी एवं कृतियुक्त शिक्षा उपलब्ध होती है।
7) क्षेत्र पर्यटन में ज्ञानेन्द्रिय सक्रिय रूप में कार्य करती हैं।
8) सहनशक्ति, सहभागिता, अनुशासन, नेतृत्व, उत्तरदायित्व, रुचि, अभिवृत्ति, अभिव्यक्ति आदि का विकास सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उपयुक्त है।
9) ऐतिहासिक स्थल, अवशेष, भवन, संग्रहालय, भौगोलिक या सांस्कृतिक पर्यावरण, ग्रामीण परिवेश, आर्थिक-वाणिज्य-वैज्ञानिक महत्व के स्थलों के अवलोकन के लिए उपयुक्त विधि है।

4.2.3.2 फिल्म स्क्रीनिंग

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया को सुलभ, सुचारु, मनोरंजक, आनन्ददायी बनाने के लिए शैक्षणिक साधन उपयुक्त होते हैं। छात्रों को क्रियाशील बनाने के लिए विभिन्न साधनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। छात्रों में योग्यता, रुचि, मनोवृत्तियों को विकसित करने के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री सहायक होती है। पाठ्यांश को सजीव, सरल तथा प्रभावी बनाने के लिए यह उपयुक्त है। दृश्य-श्रव्य सामग्री में रेडियो, चलचित्र, दूरदर्शन आदि प्रभावी है।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण :

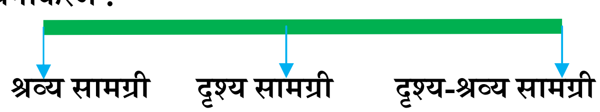

चल चित्र / फिल्म खण्ड/ फिल्म स्क्रीनिंग :

प्रथम महायुद्ध के पश्चात विभिन्न विषयों के शिक्षण में चलचित्रों का प्रयोग होने लगा था। पश्चिमी देशों में इनका उपयोग विषय शिक्षण के लिए अधिकतर हो रहा है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सीखने की प्रक्रिया को यह सरल बनाने में योगदान देता है। मानवीय सम्बन्धों को अधिक स्पष्ट करने के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में चलचित्र का प्रक्षेपण उपयुक्त होता है। विभिन्न स्थलों के रीति-रिवाज, परंपरा, पोशाक, रहन-सहन, त्यौहार, उत्सव आदि का परीक्षण किया जा सकता है। मानव कल्याण एवं अन्तरराष्ट्रीय सद्भाव विकसित करने में सहायक होता है। सामाजिक विषय शिक्षण में फिल्मो का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में समसामयिक घटनाओं की समझ बढ़ाने के लिए

ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक क्षेत्रों में घटित घटनाओं पर विशेष चलचित्र का निर्माण एवं प्रक्षेपण उपयुक्त होता है।

चल चित्र / फिल्म खण्ड/ फिल्म स्क्रीनिंग का महत्व :

1) छात्रों को सीखने के लिए प्रेरणा देने का कार्य करती है।
2) अनुभव करने की स्थितियाँ प्रस्तुत करने में सहायक होती है।
3) छात्रों की ग्राह्य शक्ति को विस्तृत, विकसित एवं व्यापक बनाने में उपयुक्त होता है।
4) छात्रों को स्वयं शिक्षा के लिए प्रेरणा प्राप्त करती है।
5) छात्रों में समझ की शक्ति विकसित करने में सहायक है।
6) छात्र अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार इससे ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए चलचित्र का चयन महत्वपूर्ण है। फिल्म विषयवस्तु में समाहित ज्ञान के लिए सहायक होनी चाहिए। शिक्षाप्रद, मनोरंजक, अभिनयपूर्ण, आकर्षक, कलात्मक, रुचिपूर्ण, योग्य भाषा होनी चाहिए। आवाज स्पष्ट एवं समझने योग्य होनी चाहिए। चलचित्र प्रदर्शित करने के उपरांत शिक्षकों की छात्रों के साथ चर्चा होना जरूरी है। छात्रों द्वारा पूछे प्रश्न, शंका, समस्या आदि का निवारण शिक्षक द्वारा होना आवश्यक है। छात्रों की समझ की कमी को शिक्षक अपने निवेदन द्वारा पूरा कर सकते हैं। चलचित्र पर लेखन से विषय समझ का ज्ञान प्राप्त होता है।

4.2.3.3 सर्वेक्षण (Survey)

सर्वेक्षण द्वारा छात्रों को स्व-अन्वेषण के लिए प्रेरित किया जाता है। स्थानीय वातावरण के सर्वेक्षण के लिए यह विधि उपयुक्त है। सर्वेक्षण के लिए कक्षा के छात्रों को 5-6 समूहों में विभाजित कर उनमें आपस में सहभागिता को बढ़ावा दिया जा सकता है। प्रत्येक समूहों को एक विषय क्षेत्र का सर्वेक्षण करने का कार्य दिया जा सकता है।

उदाहरणार्थ किसी ग्राम का सर्वेक्षण निम्न आधार पर कर सकते हैं।

- ❖ परिवार की संख्या
- ❖ परिवार में सदस्यों की संख्या
- ❖ परिवार में स्त्री-पुरुष सदस्यों की संख्या
- ❖ परिवार में आय कमाने वाले सदस्यों की संख्या इत्यादि

सर्वेक्षण का महत्व

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सर्वेक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वेक्षण द्वारा किसी भी क्षेत्र का सकल ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

1) भौगोलिक स्थिति

ग्राम की भौगोलिक स्थिति कैसी है। पहाड़, नदियाँ, झरने, जंगल, खेती, मौसम की स्थिति आदि की जानकारी छात्र लेंगे।

2) उद्गम एवं विकास

ग्राम का इतिहास क्या है। ग्राम का उद्गम और विकास कैसे हुआ है। छात्र ग्राम की वर्त्तमान एवं प्राचीन विकास की अवस्था की जानकारी हासिल करेगा।

3) आर्थिक व्यवस्था

ग्राम के लोगों का व्यवसाय, आर्थिक उत्पादनों का साधन क्या है इसकी जानकारी हासिल की जा सकती है।

4) सुविधा

निवास व्यवस्था, दुकान, यातायात, स्वास्थ्य आदि सुविधाओं की जानकारी छात्र हासिल करेंगे।

5) शासन व्यवस्था

ग्राम की पंचायत व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था आदि की जानकारी सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त होती है।

इस प्रकार सभी छात्र निर्धारित कार्य पूरा करने के उपरांत एक दस्तावेज तैयार करेगा। जिसका वह विश्लेषण करेगा। यह सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त विश्वसनीय आलेख होगा। इस आधार पर उपयुक्त निष्कर्ष निकल सकते हैं। आनेवाले छात्रों के लिए यह उपयुक्त रहेगा। इसके द्वारा छात्र जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव करेगा।

4.3 कार्य आवंटन

1) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों में प्रभावी विधियों का वर्णन कीजिए।

4.4 क्रियाएँ

1) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियाँ एवं तंत्रों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

2) विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों की सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भूमिका बताइए।

4.5 संदर्भ ग्रन्थ

- कुमारी, सुशीला, (2010), "इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- जैन, आमिर चंद, (2013), "सामाजिक ज्ञान शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), "सामाजिक अध्ययन का शिक्षण", आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), "इतिहास शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- पांडये, रमाकांत, (2012), "इतिहास शिक्षा", दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन।
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), "समाज अध्ययन–शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), "भूगोल–शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- सक्सेना, राधारानी, (2013), "नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), "नागरिकशास्त्र शिक्षण", जयपुर, अपोलो प्रकाशन।

इकाई 5
आकलन

5.1 उद्देश्य
5.2 प्रस्तावना
5.3 आकलन क्या है?
5.4 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
5.5 सतत और व्यापक मूल्यांकनः उद्देश्य, सिद्धान्त और आवश्यकता
5.6 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की चुनौतियां
5.7 सीखने के लिए आकलन
5.8 आकलन का वर्तमान परिदृश्य
5.9 रचनात्मक आकलन
5.10 योगात्मक आकलन:
5.11 रचनात्मक व योगात्मक आकलन में अन्तर
5.12 आकलन के लिए उपकरणों का विकास
5.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

5.1 उद्देश्य: इस इकाई को पढने के उपरांत आप-

- आकलन के महत्त्व को समझ सकेंगे।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- सतत और व्यापक मूल्यांकन में प्रयोग किए जाने वाले विचारों को जान पाएंगे।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली चुनौतियों को जान पाएंगे।

5.2 प्रस्तावना

आकलन किसी भी शिक्षा प्रणाली का एक अटूट अंग होता है। यह पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और उसके शिक्षणशास्त्रीय संचालन जितनी ही जरूरी एक प्रणाली है जो यह मापने की कोशिश करती है कि ‘जो इरादे थे’ जैसे शैक्षिक लक्ष्य, वे किस हद तक हासिल किए गए या नहीं और जिस तरह से ‘सोचा और संचालित किया गया’ जैसे, पाठ्यक्रम, सीखने-सिखाने के संसाधन तथा शिक्षणशास्त्रीय अनुभव, उस तरीके से हासिल किए गए थे या नहीं। आकलन से हासिल किए गए सबूतों की रोशनी में यह मुमकिन है कि या तो उन ‘सीखने या शैक्षिक’ उद्देश्यों पर दोबारा विचार किया जाए या शिक्षणशास्त्रीय अनुभवों को दोबारा रचा जाए।

5.3 आकलन क्या है?

सामाजिक विज्ञान में आकलन के बारे में जब बात करते हैं, तो उसमें बहुत-सी चीजें शामिल होती हैं। सर्वप्रथम, हम देखें कि आकलन के उद्देश्य क्या-क्या हो सकते हैं? मोटे तौर पर इसके दो प्रकार के उद्देश्य हो सकते हैः पहले को हम शिक्षण शास्त्रीय उद्देश्य कह सकते हैं। इसके भी दो प्रकार हो सकते हैं-1. सीखने में मदद करना। यानी, किसी बच्चे का आकलन हम इसलिए करते हैं ताकि उसकी बेहतर सीखने में मदद कर सकें। 2. पूरी कक्षा के शिक्षण की बेहतर व्यवस्था। उपरोक्त उद्देश्यों में दूसरा उद्देश्य संभावित है और दोनों ही एक-दूसरे को परस्पर समाहित (ओवरलैप) करते हैं। यहां मैं

कहना चाहता हूं कि एक बच्चे का आकलन मैं इसलिए करता हूं ताकि बेहतर सीखने में उसकी मदद कर सकूं, दूसरी स्थिति में जब मैं अपनी पूरी कक्षा को देखता हूं कि 25 या 30 फीसदी बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं, तो मैं अपनी शिक्षण प्रणाली और कक्षा में अपने तरीकों को बदल देता हूं। उसे सभी बच्चों के लिए उपयुक्त बनाने की कोशिश करता हूं। यहां ध्यान किसी एक बच्चे पर न होकर पूरे समूह पर होता है, जिसे मैं पढ़ा रहा हूं। दोनों में यही थोड़ा फर्क है और अन्तर-व्याप्ति भी है।

5.4 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

सतत और व्यापक आकलन पर आने से पहले यह समझना जरूरी है कि शिक्षण शास्त्रीय दृष्टि से आकलन बच्चों के सीखने को बेहतर बनाने के लिए काफी मददगार हो सकता है। इसके अलावा प्रबंधन वाले उद्देश्य का प्रमाण पत्र और अभिभावकों से संवाद के रूप में मदद ले सकते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि स्कूल और व्यवस्था के स्वास्थ्य में इससे बहुत अधिक मदद मिल सकती है।

आजकल आकलन के संदर्भ में खास तरह की शब्दावली का चलन है। इसे समझना जरूरी है। यह हैः रचनात्मक (फार्मेटिव) आकलन और योगात्मक (समेटिव) आकलन। रचनात्मक आकलन का मतलब है कि जो शिक्षण के साथ-साथ चल रहा है और सीखने में बच्चे की मदद कर रहा है। यानी, हम बच्चे की पढ़ाई या प्रगति साथ-साथ देखते हैं। योगात्मक का अर्थ होता है एक निश्चित अवधि के बाद किया जाने वाला आकलन, कि अब बच्चे यहां पहुँच चुके हैं। सतत एवं व्यापक आकलन रचनात्मक प्रकृति का है। वह योगात्मक आकलन में कुछ काम तो आ सकता है, लेकिन उसकी प्रकृति वह नहीं है। योगात्मक आकलन की प्रकृति है कि इसमें बीच में कुछ नहीं होता यानी आपकी जो भी समयावधि है, छह महीने या साल भर की उसके बाद आप आकलन करते हैं। जबकि रचनात्मक आकलन रोज-रोज चलने वाली प्रक्रिया है।

आपनी प्रगति की जांच कीजिए

i. आकलन से क्या समझते हैं?
ii. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा से आप क्या समझते हैं?

5.5 सतत और व्यापक मूल्यांकनः उद्देश्य, सिद्धान्त और आवश्यकता

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षा के उद्देश्यों से निकली एक कड़ी है जो बच्चे के व्यापक विकास की प्रक्रिया को सुगम करने में सहायक होती है। इसमें अन्तर्निहित सिद्धान्त शिक्षाशास्त्र के मजबूत आधारों पर टिके हैं और आकलन को कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में पेश करते हैं ताकि सही मायने में शिक्षा के उद्देश्यों को साकार किया जा सके। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में न सिर्फ स्कूली ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र आकलन का विषय होते हैं बल्कि कला, कौशल, बच्चे के रुचि-रुझान एवं सामाजिक अभिवृत्ति और मूल्य आदि भी इसमें शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया बच्चे की जरूरत के हिसाब से शिक्षक को अधिक उत्तरदायी बनाने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जरूरत के अनुसार परिवर्तित करने में सहायक होती है। आकलन की यह नई समझ बच्चों को तनाव, भय, चिंता आदि से दूर रखने का भी कारगर उपाय है। साथ ही बच्चों के कार्यों का रिकार्ड और दस्तावेजीकरण बच्चों का सीखना कैसे होता है, इस पर शिक्षक और सीखने वाले की समझ को भी समृद्ध करने में मदद करता है। यह अभिभावकों के लिए बच्चों के सीखने का एक प्रमाण भी पेश करता है।

यहां इस बात का उल्लेख जरूरी है कि पिछले कुछ दशकों में बच्चों के प्रति नजरिए में बदलाव आया है। पहले यह माना जाता था कि बच्चे महज कोरी स्लेट हैं। यह सीखने के सिद्धान्तों में बदलाव का द्योतक भी है। हम जानते हैं कि समस्त सीखना किसी अनुकरण या अभ्यास मात्रा से संभव नहीं है। बच्चा जब स्कूल आता है तो एक हद तक वह अपने समुदाय और परिवेश का ज्ञान अपने साथ लेकर आता है। बच्चों के शिक्षण के लिए इसके खास निहितार्थ हैं-

स्कूल में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को बच्चे के पूर्व ज्ञान में बढ़ोतरी या उसके सीखने की निरंतरता के रूप में स्वीकारना। स्कूल आने से पूर्व ज्ञान को महत्त्व देना।

❖ बच्चे का एक व्यक्ति के तौर पर सम्मान करना।
❖ बच्चे की सीखने की प्रक्रिया के अनुकूल शिक्षण विधि अपनाना।
❖ शिक्षण विधियों में ही आकलन के तरीके और उपकरणों को शामिल करना।

हर व्यक्ति का सीखना एक जैसा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुसार चीज़ों को समझता है तथा अर्थ निर्माण करता है। हम सभी जानते हैं कि किन्हीं दो व्यक्तियों के अनुभव एक जैसे नहीं होते। प्रत्येक बच्चे की एक दूसरे से अलग व स्वतंत्रा सत्ता को स्वीकारने के साथ ही यह बात भी माननी चाहिए कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की प्रक्रिया भिन्न हो सकती है। आकलन के परम्परागत तरीके इसकी अनदेखी करते हैं। पास-फेल की परिपाटी केवल कुछ बच्चों को ही आगे बढ़ने के अवसर देती है। परीक्षा प्रणाली एक प्रकार से पास-फेल और डिवीजन के मार्फत समाज में फैली गैर-बराबरी को ही पोषित करती है। इसके अलावा एक और बात है जो परम्परागत आकलन के तरीकों में बदलावकी मांग करती है। एक समस्या इस प्रणाली का बहुत ज्यादा पाठ्यक्रम केन्द्रित होना है। स्कूली ज्ञान के परम्परागत विषय क्षेत्रों के अलावा बच्चे की प्रतिभा के विभिन्न आयामों को आकलन का हिस्सा ही नहीं बनाया जाता। यह प्रणाली बच्चों में भ्रम पैदा करती है कि जितना भी ज्ञान है वह स्कूली किताबों में मौजूद है। इसमें ज्ञान को एक सीमित मायने में ही अहमियत दी जाती है। बच्चे की व्यक्तिगत रुचियों, विशेषताओं और रुझानों को परम्परागत प्रणाली महत्त्व नहीं देती। अतः आकलन की एक ऐसी प्रक्रिया अपनाई जाए जिसमें-

- बच्चों के द्वारा सीखे गए का आकलन सीखने के दौरान लगातार चलता रहे न कि सारा दारोमदार सत्र के अंत की परीक्षाओं पर हो और जरूरत होने पर उसे मदद मुहैया कराई जा सके।
- बच्चों के सीखने की गति और रुचियों को ध्यान में रखते हुए विविध उपकरणों और शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाए ताकि हर एक बच्चा सीख सके।
- प्रत्येक बच्चे की अभिरुचियों और व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनका भी आकलन किया जाए ताकि बच्चे का व्यापक विकास संभव हो सके।

बच्चे के अपने परिवेशीय ज्ञान को कक्षा-कक्ष और स्कूल में जगह मिल सके ताकि वह अपने-आपको अन्य बच्चों जिन्हें तथाकथित रूप से 'तेज' कहा जाता है से हीन न समझे और उनमें समानता का भाव विकसित हो सके। सभी बच्चे पास-फेल के चंगुल से मुक्त होकर परीक्षा के भय से मुक्त हो सकें।

5.6 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की चुनौतियां

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शैक्षणिक प्रक्रिया का ऐसा ताना-बाना बुना जाना है, जिसके केन्द्र में बच्चा हो। हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को समझने की है। साथ ही यह भी समझना है कि दरअसल बच्चे अपने आसपास की दुनिया के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। वे सहज रूप से अपने आसपास की दुनिया से अंतःक्रिया करके ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक को सबसे पहले यह करना है कि वह इस प्रक्रिया को समझे और उसमें हिस्सेदार बनने की कोशिश करे। साधारणतया माना जाता है कि किसी बच्चे को अगली कक्षा में जाने से रोकना और फेल करना ठीक है। लेकिन यह बात शिक्षाशास्त्र की अवधारणाओं की दृष्टि से सही नहीं है। जब बच्चा स्वभाविक प्रक्रिया में सीख रहा है तब उसे फेल करने या कक्षा में रोके रखने का औचित्य स्पष्ट नहीं होता। बच्चों को इस तरह के अवसर देना जरूरी है कि वह सीखकर अगली कक्षा में पहुँच सकें। कई बार शिक्षक इसे एक कार्यक्रम के तौर पर देखते हैं जो अभी आया है और कल खत्म हो जाएगा। कई शिक्षक इस पर भी यकीन करते हैं कि यह पहले से चला आ रहा है और जब वह स्वयं पढ़ाई करते

थे तब भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन होता था, इसलिए यह नई बोतल में पुरानी शराब है। कई शिक्षक इसे ऐसे भी समझते हैं कि परम्परागत परीक्षाओं को सतत और व्यापक मूल्यांकन की परीक्षाओं से बदल दिया गया है। कई शिक्षक इसे ऐसे भी देखते हैं कि सीसीई आ गया जैसे कि शिक्षकों पर नजर रखने वाला कोई तंत्र हो। आमतौर पर शिक्षक मानते है सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वैचारिक रूप से अच्छी है। मगर उन्हें यह चुनौतीपूर्ण लगता है कि इस प्रक्रिया को व्यवहारिक रूप कैसे दिया जाए? इसके साथ यह भी चुनौती है कि कहीं यह प्रक्रिया यांत्रिक बनकर न रह जाए। अन्य एक बाधा इसकी सामाजिक स्वीकृति की भी है। लंबे समय से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के आकलन के परम्परागत तरीके रहे हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन इन पुरानी पद्धतियों में वांछित सुधार करने का एक प्रभावशाली तरीका है। इसको आत्मसात करते हुए अपनाने का अर्थ यह है कि हम मूल्यांकन की परम्परागत प्रणाली को उसके नए स्वरूप में अपना रहे हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, बच्चों के मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में मूलभूत सुधार करते हुए सीखने-सिखाने की बात करता है। इसके क्रियान्वयन के लिए सरल और सहज उपकरण/शैक्षणिक साधनों एवं तकनीकों की जानकारी जरूरी है। साथ ही उनका रिकार्ड रखना या दस्तावेजीकरण करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत बच्चों के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का मूल्यांकन किया जाना है। इसके लिए समूह में कार्य करना, बाल मेला, प्रोजेक्ट कार्य, पोर्टफोलियो, सृजनात्मक कार्य, अभिव्यक्ति के अवसर देने होंगे और बच्चों की प्रगति के बारे में इनसे क्या-क्या सूचनाएं मिलती हैं, उन्हें सजगता के साथ देखना होगा।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षकों की तैयारी के साथ पूरे शिक्षा तंत्र की तैयारी महत्त्व रखती है। यह तैयारी स्पष्ट नज़रिए की मांग करती है। अक्सर शिक्षक यह चिंता प्रकट करते हैं कि वे किसी प्रक्रिया को उसके वास्तविक मायनों के साथ काम अपना रहे होते हैं, किंतु जब प्रशासनिक अमले या अकादमिक सहयोग एवं व्यवस्था के लोग विद्यालयों में जाते हैं तो वे इस काम को मान्यता देने के बजाय कई बार शिक्षक साथियों को हतोत्साहित करते हैं। कभी-कभी तो प्रधानाध्यापकों और अन्य साथियों से ही ऐसे कामों को समर्थन नहीं मिल पाता। इसकी वजह यह होती है कि आकलन को बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से अलग काम या कार्यक्रम के रूप में देखने का नज़रिया हावी रहता है। यदि इस प्रक्रिया को विद्यालयों की प्रक्रिया से अलग करके देखा-समझा जाता है तो यह काम बोझ जैसा लगेगा। ऐसे में इसके असल मायने गुम हो जाते हैं और यह प्रक्रिया महज औपचारिकता बनकर रह जाती है इसलिए व्यवस्था की तैयारी का मुद्दा महत्त्व का है। इसके साथ ही विद्यालय में शिक्षक-छात्रा अनुपात, बच्चों की बैठने की उचित व्यवस्था तथा शिक्षण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी महत्त्वपूर्ण है। इस पूरी प्रक्रिया में अंकों और ग्रेड से हटकर बच्चे को संकेतकवार टिप्पणियों के रूप में फीडबैक साझा करने की प्रक्रिया विकसित की गई है। टिप्पणी लिखना और फीडबैक साझा करना यह इस प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। टिप्पणी लिखना एक कठिन कार्य है। शिक्षक स्वयं यह मानते हैं कि यह एक नया काम है। सामान्यतः शिक्षकों की टिप्पणियां 'बहुत अच्छा', 'अच्छा', 'सुधार की आवश्यकता है' आदि के रूप में हुआ करती थीं। इन टिप्पणियों का स्वरूप विवरणात्मक और सकारात्मक हो, इस पर अब शिक्षक समूह में समझ बन रही है। इन टिप्पणियों को लिखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। टिप्पणियों को देने में खासतौर से तब दिक्कत आ रही है जब बच्चे उस अवधारणा को नहीं जानते हैं या अगर सही में कहें तो शिक्षक जिन बच्चों को पहले फेल कर देते थे। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, ''सीखे हुए का मूल्यांकन'' के बजाय ''सीखने के लिए मूल्यांकन'' की पैरवी करता है। समाज में परीक्षा को लेकर गलतफहमी की जड़ें इतनी गहरी जमी हुई हैं कि उन्हें आसानी से उखाड़ फेंकना संभव नहीं। कई अभिभावकों ने विद्यालयों में आकर इस तरह के प्रश्न पूछा कि परीक्षाएं क्यों नहीं हो रही हैं? अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे परीक्षाओं में न केवल पास हों बल्कि अच्छे से अच्छे अंक अर्जित करें। उन्हें इस बात की परवाह या जानकारी नहीं होती कि बच्चों को क्या आता है। निश्चित ही यह एक द्वंद है। हम मानते हैं कि ये जड़ें धीरे-धीरे कमजोर होंगी। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों को फेल और पास के खांचों में बांटने को ठीक नहीं मानता है। आज के दौर में

हम जहां शिक्षा के लोकव्यापीकरण की बात कर रहे हैं, वहीं कुछ बुनियादी समस्याएं बनी हुई हैं जो बच्चों को शिक्षा से वंचित रखती हैं। हमें मिलकर इन समस्याओं के हल भी खोजने होंगे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए।

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य बताइए।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली चुनौतियों की व्याख्या कीजिए।

5.7 सीखने के लिए आकलन

सीखने और व्यवहार में विद्यार्थियों की प्रगति के नियमित आकलन से शिक्षक पहचान सकते हैं कि किन विद्यार्थियों को अधिक सहायता की आवश्यकता है, कौन-से विद्यार्थियों की अतिरिक्त सहायता के बिना अच्छी तरह प्रगति करने की सम्भावना है और कौन-से विद्यार्थियों के सीखने की गति को तेज किए जाने की आवश्यकता है।

एक कारगर आकलन योजना के चार मुख्य उद्देश्य होते हैं-

1. वर्ष के प्रारम्भ में उन विद्यार्थियों की पहचान करना जो संकट में हैं या जिनको कठिनाइयों का अनुभव हो रहा है। इन्हें यदि वर्ष के अन्त तक ठीक ग्रेड-स्तर तक प्रगति करना है तो उनके लिए अतिरिक्त शिक्षण की या गहन प्रयासों की आवश्यकता हो सकती है। साथ ही ऐसे विद्यार्थियों की पहचान भी करना जो निर्दिष्ट मानदण्डों तक पहुँच चुके हैं और जिन्हें चुनौतीपूर्ण कार्य दिए जाने की जरूरत है।
2. वर्ष के दौरान सभी विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करना ताकि यह पता चलता रहे कि संकटग्रस्त विद्यार्थी महत्त्वपूर्ण कौशलों में पर्याप्त प्रगति कर रहे हैं या नहीं। साथ ही ऐसे विद्यार्थियों की पहचान भी हो जो पीछे छूट रहे हैं या जिनको अतिरिक्त चुनौती दिए जाने की जरूरत है।
3. अलग-अलग विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके बारे में उपलब्ध जानकारी के आधार पर शैक्षणिक नियोजन करना।
4. इसका मूल्यांकन करना कि प्रदान की गई शिक्षा तथा सुधार के प्रयास वर्ष के अन्त तक सभी विद्यार्थियों को अच्छे ग्रेड स्तर को हासिल करने के लिए पर्याप्त रूप से शक्तिशाली हैं या नहीं।
5. ऊपर बताए गए चारों उद्देश्य चार प्रकार के आकलनों से हासिल किए जा सकते हैं: 1. छानबीन करना (स्क्रीनिंग), 2. प्रगति की निगरानी करना, 3. निदानात्मक तथा 4. परिणामात्मक। वे मोटे तौर पर उपरोक्त चारों उद्देश्यों के अनुरूप होते हैं, लेकिन वे सभी कारगर शिक्षण और सुधार के प्रयासों की योजना बनाने में सहायता करने का योगदान दे सकते हैं।

छानबीन करने वाले आकलन- छानबीन करने वाले आकलन व्यापक योग्यता तथा उन महत्त्वपूर्ण कौशलों को शीघ्र तथा दक्षतापूर्वक मापते हैं जो विद्यार्थियों के प्रदर्शन के बारे में पहले से दिखने वाले मजबूत संकेतों के रूप में जाने जाते हैं। सभी विद्यार्थियों के लिए एक प्रारम्भ-रेखा के रूप में किए जाने वाले ये आकलन उन विद्यार्थियों को पहचानने में मदद करते हैं जो या तो ग्रेड-स्तरीय अपेक्षाओं को पूरा नहीं करते या उनको जिनकी योग्यता उन अपेक्षाओं से अधिक है। इनके परिणामों को शिक्षण के लिए एक प्रारम्भ-बिन्दु के रूप में या अतिरिक्त मूल्यांकन की आवश्यकता के सूचक के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

प्रगति की निगरानी करने वाले आकलन- प्रगति की निगरानी करने वाले आकलन भी संक्षिप्त होते हैं, लेकिन ये समय-समय पर यह पता करने के लिए किए जाते हैं कि विद्यार्थी पर्याप्त प्रगति कर रहे हैं या नहीं। प्रगति की निगरानी करने वाले आकलनों के आँकड़े निरन्तरता बनाए रखते हुए निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए एकत्रित, मूल्यांकित तथा उपयोग

किए जाना चाहिए- किसी विद्यार्थी की प्रगति की दर ज्ञात करना शिक्षण की प्रभावशीलता के बारे में जानकारी प्रदान करना और उसके आधार पर यदि आवश्यक हो तो प्रयास में संशोधन करना अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता को पहचानना मानदण्डों तथा उपलब्धियों के बीच के अन्तरों का विश्लेषण और व्याख्या करना।

निदानात्मक आकलन- हालाँकि निदानात्मक आकलन अपेक्षाकृत लम्बे होते हैं, परन्तु वे तय कौशलों का गहराई से भरोसेमन्द आकलन प्रदान करते हैं। उनका मुख्य प्रयोजन अधिक कारगर शिक्षण तथा सुधार के प्रयास के नियोजन के लिए जानकारी प्रदान करना होता है। निदानात्मक आकलन तब किए जाना चाहिए जब इसकी स्पष्ट आशा हो कि वे किसी बच्चे की अकादमिक या व्यवहार-सम्बन्धी जरूरतों के बारे में ऐसी नई या अतिरिक्त जानकारी देंगे जिसका उपयोग अधिक शक्तिशाली शिक्षण या सुधार के प्रयासों की योजना बनाने में सहायता के लिए किया जा सकता है। यदि स्कूल छानबीन करने वाले, प्रगति की निगरानी करने वाले और परिणामात्मक आकलनों का क्रियान्वयन विश्वसनीय तथा उचित तरीके से कर रहे हों, तो औपचारिक निदानात्मक उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए अतिरिक्त परीक्षण की जरूरत घट जाना चाहिए। चूँकि वे बहुत समय लेने वाले तथा खर्चीले होते हैं, इसलिए अन्य आकलनों की अपेक्षा पूर्ण निदानात्मक आकलन बहुत कम बार किए जाना चाहिए। परन्तु, निदानात्मक उपकरणों से निकाली गई उप-परीक्षाओं का उपयोग उन क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए किया जा सकता है जिनका मूल्यांकन छानबीन करने, प्रगति की निगरानी करने या परिणामात्मक आकलनों में नहीं होता। स्कूल के नेतृत्व को निरन्तर यह पूछते रहना चाहिए कि औपचारिक निदानात्मक परीक्षाओं के संचालन में लगने वाले समय की तुलना में ऐसी परीक्षाओं से शिक्षकों को प्राप्त होने वाली जानकारी का शिक्षण की योजना बनाने के लिए समुचित मूल्य है या नहीं।

परिणामात्मक आकलन- परिणामात्मक आकलन, जो स्कूली वर्ष के अन्त में किए जाते हैं, ज्यादातर महत्त्वपूर्ण परिणामों (उदाहरण के लिए सी.एस.ए.पी) वाली सामूहिक रूप से संचालित की जाने वाली परीक्षाएँ होती हैं। परिणामात्मक आकलनों का उपयोग अक्सर स्कूल, जिला तथा राज्य की रिपोर्टों में उल्लेख करने के प्रयोजनों के लिए किया जाता है। ये परीक्षाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं क्योंकि ये स्कूल के नेतृत्व तथा शिक्षकों को उनके शैक्षणिक कार्यक्रम की व्यापक प्रभावोत्पादकता के बारे में फीडबैक देती हैं। एक कारगर मूल्यांकन योजना के हिस्से के रूप में परिणामात्मक आकलनों को हर वर्ष के अन्त में आयोजित किया जाना चाहिए।

5.8 आकलन का वर्तमान परिदृश्य

भारत में स्कूली शिक्षा के आकलन तथा मूल्यांकन की वर्तमान व्यवस्था परीक्षा-आधारित है। इसलिए, उसका ध्यान केवल संज्ञानात्मक ढंग से सीखने के परिणामों पर ही केन्द्रित रहता है। इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रमेतर (को-करीकुलर) क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं। हालाँकि को-करीकुलर क्षेत्र भी बच्चे के विकास के समान रूप से महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। पाठ्यक्रम के क्षेत्रों में भी जोर रटकर सीखने और याद रखने पर रहता है, जिसका परिणाम उच्चतर मानसिक योग्यताओं, जैसे कि समीक्षात्मक सोच, समस्याओं का समाधान करना तथा सृजनात्मक योग्यता आदि की उपेक्षा के रूप में दिखाई देता है। भारत में, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, ने शिक्षा के हर क्षेत्र की पड़ताल की है। यह दस्तावेज कहता है कि मूल्यांकन तथा आकलन के सन्दर्भ में परीक्षाओं में सर्वांगीण सुधारों की आवश्यकता है। सीखने वालों में असफल रहने वाले विद्यार्थियों की ऊँची दर, स्कूल छोड़ देने वाले विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या, अस्वास्थ्यप्रद स्पर्धा, तनाव, मानसिक रूप से टूटने तथा आत्महत्याओं के मामले भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के लिए देश की मूल्यांकन व्यवस्था, जो वर्तमान में परीक्षा-उन्मुख है, की पड़ताल करना अनिवार्य रूप से आवश्यक बना देते हैं। समय की माँग हमारे युवा सीखने वालों को, रटकर सीखने वालों के बजाय, समस्याओं को सुलझाने वाले अभिनव विचारकों के रूप में तैयार करने की है।

परन्तु, परीक्षा की वर्तमान व्यवस्था बिलकुल लचीली नहीं है। यह 'एक ही साइज सबको माफिक बैठ जाती है' के सिद्धान्त पर आधारित है, जिसमें सीखने वाले के व्यक्तित्व और सृजनात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता। यह सीखने वालों के वास्तविक अन्तर्निहित सामर्थ्य को मापने में असफल रहती है और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले अंक दरअसल कच्चे अंक होते हैं जो सीखने वालों की असली तस्वीर पेश नहीं करते। स्कूल अन्त की परीक्षाओं, जो बोर्ड परीक्षाएँ कहलाती हैं, के ढर्रे का ही स्कूलों में भी पालन किया जाता है और वहाँ भी जोर अंकों पर ही होता है, जिसके चलते शिक्षा का पूरा उद्देश्य ही विफल हो जाता है। परीक्षा के इस प्रतिकूल प्रभाव ने सिखाने तथा सीखने के शैक्षणिक सिद्धान्तों को खासी क्षति पहुँचाई है। इस विकृति को सुधारने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 ने कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रस्तावित किए हैं, जो इस प्रकार हैं-

- ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
- यह सुनिश्चित करना कि सीखने को रटने की पद्धतियों से दूर कर लिया जाए।
- पाठ्यचर्या के पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित रहने के बजाय उसको बच्चों को व्यापक विकास प्रदान करने के लिए समृद्ध बनाना।
- परीक्षाओं को अधिक लचीला बनाना तथा उनको कक्षा के जीवन में समेकित करना।
- फिक्र करने योग्य सरोकारों के आधार पर देश की लोकतांत्रिक राज्य-व्यवस्था के भीतर विद्यार्थी की एक सर्वोपरि राष्ट्रीय पहचान को पोषित करना।

इन मार्गदर्शक सिद्धान्तों से सीखने-सिखाने के दृष्टिकोण में, पारम्परिक पद्धतियों से एक स्पष्ट परिवर्तन, अर्थात व्यवहारवाद से निर्माणवाद (कंस्ट्रक्टिविज्म) की ओर बदलाव दिखाई देता है। शिक्षण का नया दृष्टिकोण सीखने वाले पर केन्द्रित है और आकलन की प्रक्रिया का लक्ष्य भी सीखने वालों की व्यापक प्रगति पर गौर करते हुए उनकी सीखने की क्षमताओं में वृद्धि करना होता है। दृष्टिकोण में आया यह परिवर्तन अपने आप में आकलन के उपकरणों तथा तकनीकों में बड़े बदलाव की माँग करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 ने सीखने-सिखाने के दृष्टिकोण में पुराने व्यवहारवाद के दृष्टिकोण से निर्माणवाद के दृष्टिकोण की ओर परिवर्तन प्रस्तावित किया है। व्यवहारवाद के दृष्टिकोण के अन्तर्गत विद्यार्थी की उपलब्धि का निर्धारण याददाश्त के आधार पर होता था, जिसके परिणामस्वरूप उच्चतर संज्ञानात्मक (मेटा-कॉग्नीटिव) कौशलों, जैसे कि समीक्षात्मक सोच, तर्क क्षमता तथा समस्याओं को सुलझाने की क्षमता पूरी तरह उपेक्षित रह जाती थीं। दूसरी ओर, निर्माणवाद की मान्यता है कि सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें अर्थ अनुभव के आधार पर विकसित होता है, और यह भी कि सीखने को वास्तविक स्थितियों में स्थापित किया गया होना चाहिए, उसे सामाजिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना चाहिए और सीखने की विश्वसनीय सामग्री/कार्यों का उपयोग करना चाहिए। एक निर्माणवाद कक्षा में सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को पहल करने के लिए प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, मुक्त रूप से पारस्परिक क्रियाकलाप करने और स्वतंत्र सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। और यह फिर उनको समीक्षात्मक विचार-क्षमता तथा समस्याओं को सुलझाने का दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। इस पद्धति के अंग के रूप में, विद्यार्थियों से उत्तरों की खुली सम्भावनाओं वाले तथा जानकारी के अनुमानित विस्तार पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं और उनके विचारों को समुचित मान्यता दी जाती है। सामूहिक कार्य तथा जोड़ों में किए जाने वाले कार्य को प्रोत्साहन दिया जाता है, क्योंकि विचारों का आदान-प्रदान अवधारणात्मक स्पष्टता तथा भाषा सीखने में सहायता करता है। निर्माणवादी पद्धति इस मान्यता पर आधारित है कि सभी मनुष्य अपना ज्ञान स्वयं निर्मित

करते हैं, और सही अवसर तथा वातावरण दिए जाने पर सीखने वाले अपने ज्ञान की रचना स्वयं कर सकेंगे। शिक्षण की यह नई पद्धति अपने साथ ही स्कूलों में आकलन के तरीकों में भी संगत परिवर्तनों की माँग करती है।

5.9 रचनात्मक आकलन

विद्यार्थी साक्षात्कार- इसमें बच्चों से प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से देने की अपेक्षा की जाती है। ये प्रश्न-शृंखलाएँ उनकी समझ के विस्तार और गहराई का अनुमान लगाने के लिए एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।

अवलोकन- कक्षा में चक्कर लगाते हुए शिक्षक काम में लगे हुए बच्चों का अवलोकन करते हैं और उनके काम में उन्हें दिशा निर्देश देते हैं व उनकी मदद करते हैं। इससे शिक्षक को समूह या व्यक्तिगत कार्य को व्यापक रूप में समझने में मदद मिलती है।

प्रश्न पूछना- कक्षा में आमतौर पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान प्रश्न पूछने से शिक्षक को बच्चे के ज्ञान की जानकारी मिलती है। इससे शिक्षक व बच्चे दोनों को तत्काल फीडबैक मिल जाता है और शिक्षण में बदलाव के लिए गुंजाइश भी रहती है।

चर्चाएँ- कक्षा में चर्चा शुरू करने के लिए शिक्षक मुक्त प्रश्न पूछ सकते हैं और बच्चे उस पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। इसका उद्देश्य समीक्षात्मक सोच और रचनात्मक सोच के कौशलों का विकास करना है।

5.10 योगात्मक आकलन

पेपर पेंसिल टेस्ट- विद्यार्थियों से किसी इकाई, सत्र या कोर्स के अन्त में टेस्ट लिखने को कहा जाता है।

लिखित कार्य- विद्यार्थियों से किसी टॉपिक या गतिविधि या घटना के बारे में लिखने को कहा जाता है और इस कार्य के साथ एक रूब्रिक भी दिया जाता है।

मौखिक कार्य- शिक्षक विद्यार्थियों से कोई कहानी या घटना या टॉपिक सुनाने को कहते हैं और बच्चे द्वारा हासिल किए गए कौशलों और क्षमताओं की जाँच करते हैं।

मानक टेस्ट- बोर्ड व प्रवेश परीक्षा जैसी परीक्षाओं की शर्तों को पूरा करने के लिए विद्यार्थी विषय-सामग्री से सम्बन्धित मानक टेस्ट लिखते हैं। योगात्मक आकलन में यह बात महत्त्वपूर्ण है कि ऊपर बताए गए सभी प्रकार के आकलनों से मिली जानकारी को विद्यार्थियों की उपलब्धि या ग्रेडिंग या प्रमोशन के लिए प्रयोग में लाया जाए।

5.11 रचनात्मक व योगात्मक आकलन में अन्तर

अधिगम के लिए आकलन रचनात्मक है, अधिगम के दौरान	**अधिगम का आकलन योगात्मक है,** अधिगम के पूरा होने के बाद
अग्रदर्शी: क्योंकि विद्यार्थी साझा और अपेक्षित परिणामों के लिए अपनी प्रगति का आकलन करते हुए धीरे-धीरे और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं।	पश्चदर्शी: क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम की गुणवत्ता का मूल्यांकन और संक्षेपीकरण उसके पूरा हो जाने के बाद करते हैं।
निरन्तर: क्योंकि शिक्षक और विद्यार्थी लगातार प्रगति का आकलन करते रहते हैं और अवरोधों से निपटते रहते हैं।	चक्रीय: क्योंकि इसे समय-समय पर आयोजित किया जाता है।
विभिन्नतापूर्ण: क्योंकि विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से और अपनी गति से विकास करते हैं।	सम्मिलित रूप में मिलने वाला क्योंकि टेस्ट व परीक्षाओं में सभी विद्यार्थियों से समान आउटपुट की जरूरत होती है।
अधिगम के दौरान चूँकि शिक्षक के सुगमीकरण के कारण विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन तत्काल हो जाता है; इसलिए	अधिगम का अन्त क्योंकि उपलब्धि की परीक्षा अधिगम के बाद आयोजित की जाती है।

विद्यार्थियों को पता होता है कि वे कहाँ हैं, उन्हें कहाँ जाना है और वहाँ कैसे पहुँचना है।	
विवरणात्मक: क्योंकि आकलन का तालमेल साझा अधिगम उद्देश्यों के साथ होता है जो यह संकेतित करते हैं कि पाठ का/के उद्देश्य क्या है/हैं और वे कौन-सी अवधारणाएँ और कौशल हैं जिनमें महारत हासिल करनी है।	निर्णयात्मक: क्योंकि यहाँ उद्देश्य अधिगम की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है।
उपचारात्मक: क्योंकि विद्यार्थी पाठ के दौरान अपनी शंकाओं के निवारण या उपलब्धि के मार्ग में आने वाले अवरोधों को दूर करने के लिए लगातार शिक्षक की मदद ले सकते हैं।	गैर-उपचारात्मक: क्योंकि यहाँ उद्देश्य मूल्यांकन है, अधिगम के सुधार के लिए संकेत देना नहीं
गुणवत्तापरक: क्योंकि शिक्षक और विद्यार्थी निरन्तर अधिगम की गुणवत्ता का निर्णय साझा और अपेक्षित परिणामों के आधार पर कर सकते हैं और उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने की दिशा में काम कर सकते हैं।	परिमाणात्मक: क्योंकि इसका सम्बन्ध अंकों व ग्रेडों से है।
शिक्षक+विद्यार्थीउन्मुख : क्योंकि आकलन शिक्षक एवं विद्यार्थियों की कक्षा में होने वाली अनवरत एवं गतिशील अन्तःक्रियात्मकता का परिणाम है।	शिक्षक उन्मुख: क्योंकि मूल्यांकन शिक्षक एवं विद्यार्थियों की अन्तःक्रियात्मकता के बिना ही किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1. सीखने में आकलन किस प्रकार अपनी भूमिका निभाता है?
2. आकलन का वर्तमान परिदृश्य क्या है?
3. रचनात्मक और योगात्मक आकलन क्या है? दोनों में बुनियादी रूप से क्या अन्तर है?

5.12 आकलन के लिए उपकरणों का विकास

कक्षा में विद्यार्थियों के आकलन के लिए उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। इसमें उपकरणों का निर्माण शिक्षक द्वारा किया जाता है जिससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि कक्षा में विद्यार्थी ने कितना सीखा है? शिक्षक द्वारा निर्मित कुछ उपकरण निम्नलिखित हैं-

1. **उपलब्धि परीक्षण-** इसके अन्तर्गत शिक्षक द्वारा कुछ परीक्षण तैयार किए जाते हैं जिसके द्वारा वह विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षक द्वारा जिस पाठ को कक्षा में पढ़ाया जाता है उसका वह मूल्यांकन भी करता है। यह मूल्यांकन इसलिए भी किया जाता है जिससे यह जाना जा सके कि अब तक विद्यार्थी ने कितना सीखा है? इस आधार पर विद्यार्थी को एक उपलब्धि प्रमाण पत्र दिया जाता है।
2. **प्रदत्त कार्य-** इसके अन्तर्गत कक्षा में विद्यार्थियों को कुछ प्रदत्त कार्य दिए जाते हैं। प्रदत्त कार्य का उद्देश्य यह है कि जो भी संकल्पना को कक्षा में पढ़ाया गया है उसका व्यावहारिक जीवन में क्या उपयोग है इसकी जानकारी प्राप्त करना।
3. **प्रश्नोत्तरी-** इसमें विद्यार्थियों को किसी विषय से जुड़े प्रश्नों का निर्माण करने के लिए कहा जाता है जिससे यह जाना जा सके कि विद्यार्थियों में प्रश्न के निर्माण की कितनी क्षमता का विकास हुआ है। इससे विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्रिया का विकास होता है।

4. **प्रोजेक्ट-** विद्यालय में विद्यार्थियों को कुछ प्रोजेक्ट भी दिए जाते है जिससे यह जाना जा सके कि क्या उनमें वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिल रहा है या नहीं। उदाहरण के लिए 6वीं कक्षा के विद्यार्थियों को ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका के साधन पर एक प्रोजेक्ट कार्य करवाया जा सकता है।
5. **प्रस्तुतीकरण-** कक्षा में विद्यार्थियों के भीतर भाषण कौशल के विकास के लिए प्रस्तुतीकरण कार्य करवाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उनके अन्दर से डर को भी दूर किया जा सकता है। इससे यह भी जाना जा सकता है कि विद्यार्थी जिस ज्ञान को ग्रहण कर रहे हैं क्या उसे वे अभिव्यक्त कर पा रहे हैं या नहीं।
6. **रचनात्मक अभिव्यक्ति-** इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों से कुछ रचनात्मक कार्य कार्य करवाए जाते हैं जैसे की उन्हें कुछ रचनात्मक लेखन, रचनात्मक पेंटिंग्स और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए कहा जाता है जिससे उनके अन्दर रचनात्मकता का निर्माण हो सके।
7. **समूह गतिविधि-** समूह गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग की भावना का विकास किया जा सकता है। कोई भी समूह गतिविधि के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों में सहयोग की भावना का आकलन कर सकते हैं। समूह गतिविधि से विद्यार्थियों को किसी कार्य को कम समय में करने के लिए अभिप्रेरित बजी किया जा सकता है।

आपनी प्रगति की जाँच कीजिए।

1. आकलन के लिए विभिन्न उपकरण कौन कौन से हैं आप अपने विद्यार्थियों के आकलन के लिए एक उपकरण का विकास कीजिए।

5.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

- कुमारी, सुशीला, (2010), "इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- जैन, आमिर चंद, (2013), "सामाजिक ज्ञान शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), "सामाजिक अध्ययन का शिक्षण", आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), "इतिहास शिक्षण", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- दूबे, सत्यनारायण (2014). सामाजिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान शिक्षण. इलाहबाद: शारदा पुस्तक भवन.
- पांडये, रमाकांत, (2012), "इतिहास शिक्षा", दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन।
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), "समाज अध्ययन –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), "भूगोल–शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ", दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- सक्सेना, राधारानी, (2013), "नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), "नागरिकशास्त्र शिक्षण", जयपुर, अपोलो प्रकाशन।
- एन.सी.आर.टी. (2010). सामाजिक विज्ञान पोजीशन पेपर
- एन.सी.आर.टी. (2010). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी (2014). लर्निंग कर्व.
- दिगंतर, शिक्षा विमर्श
- Cranston, M. (1973), 'What are Human Rights?', London, Bodley Head.

निवेदन- विगत कुछ वर्षों से सेवारत शिक्षकों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम उथल पुथल के दौर से गुजरा है। इस संदर्भ में नयी पाठ्यचर्या को लागू करना और उसके अनुसार समय की सीमा के अन्तर्गत अध्येताओं को सामग्री उपलब्ध करवाना एक चुनौती भरा कार्य था। इस चुनौती को जिन लेखकों और संकलनकर्ताओं की मदद से सुगम किया गया, वे सब बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक अध्ययन सामग्री में जिन मूल पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, उनका यथासंभव संदर्भ ग्रन्थों के रूप में उल्लेख किया गया है। लेखक और संकलनकर्ता मूल ग्रन्थों के लेखकों के उद्यम और बौद्धिक सक्रियता का सम्मान करते हैं और इनके प्रति आभार ज्ञापित करते हैं। यदि यह ज्ञात होता है कि किसी मूल ग्रन्थ का नामोल्लेख रह गया है तो उसे भी हम साभार सम्मिल्लित करेंगे। पाठकों से अनुरोध है कि वे अपना फीडबैक उपलब्ध कराते रहे जिससे इस सामग्री को उत्तरोत्तर गुणवत्ता संपन्न किया जा सके।